★ वर्ष 47
★ अंक 7-8
★ जुलाई-अगस्त 2020

हँसती दुनिया

₹ 15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 47 ● अंक 07–08 ● जुलाई–अगस्त 2020 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक
सुलेख 'साथी'

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
16. समाचार
44. पढ़ो और हँसो
50. कभी न भूलो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

हँसती दुनिया

कहानियां

10. चन्द्रगुप्त की चतुराई
: जितेन्द्र कुमार

19. नहीं चाहिए ऐसा उपहार
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

26. ईर्ष्या का फल
: वैदही शर्मा

31. उपकार का फल
: आर. डी. भारद्वाज

39. चुहिया की जिद
: मीरा सिंह 'मीरा'

42. मीनू और लकड़बग्घा
: साबिर हुसैन

कविताएं

9. बादल आये
: डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी

9. वर्षा रानी
: ऋषि मोहन श्रीवास्तव

17. रक्षा बन्धन
: शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

17. वतन हमारी जान है
: डॉ. ओम पंकज

22. झम झम बरसा पानी रे
: शिवनारायण सिंह

25. देश हमारा अपना
: शोभा शर्मा

25. आजादी को कभी न भूलें
: डॉ. हरीश निगम

30. बादल आये-बादल आये
: वंदिता अरोड़ा

49. बाल कविताएं
: अंशु शुक्ला

विशेष/लेख

6. मानसून
: साभार

7. बाबा अवतार सिंह जी, निरंकारी राजमाता जी और माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

8. आम स्वाद ही नहीं ...
: विभा वर्मा

18. विटामिन 'सी'
: प्रभा

23. कंगारू
: डॉ. परशुराम शुक्ल

28. समुद्र का जल नमकीन ...
: राजेश अरोड़ा

41. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

46. सैकरीन का अविष्कार
: राधेलाल 'नवचक्र'

48. लाला लाजपतराय
: राजेन्द्र यादव 'आजाद'

बन्धन से मुक्ति

आज के युग में किसी भी व्यक्ति को बन्धन में रहना पसन्द नहीं है। एक छोटा बच्चा भी बन्धन में नहीं रहना चाहता। उसको भी आजादी चाहिए। उसको बार-बार रोकना, टोकना, आदेश सुनना अच्छा नहीं लगता। उसको अगर जोर से बोलो तो वह बुरा मान जाता है या रोने लगता है। इसी तरह नौजवानों को, प्रौढ़जनों को और चाहे वृद्धजन हों, किसी को भी बांधकर रखना मुश्किल है।

कोई विद्यालय नहीं जाना चाहता; कोई नया कार्य सीखना नहीं चाहता; कोई आमदनी करना नहीं चाहता; कोई अच्छा व्यवहार नहीं कर पाता; कोई बड़ों का सम्मान नहीं करता तो कोई छोटों पर अपना अधिकार जमाने में संकोच नहीं करता। कोई अपने समाज या संगठन की गठजोड़ में मग्न हो जाता है।

कुछ बन्धन हमें स्पष्ट दिखाई दे जाते हैं लेकिन कुछ ऐसे बन्धन भी हैं, हम उनमें बंधे होने के बावजूद भी अपने आपको बंधा हुआ महसूस नहीं करते परन्तु हर बन्धन में एक निहित स्वार्थ छुपा होता है।

कुछ बन्धन मजबूरी में होते हैं और कुछ जरूरी भी होते हैं। जैसे बच्चों को स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजना माँ-बाप को जरूरी लगता है परन्तु बच्चों को मजबूरी लगती है क्योंकि बच्चों को तो हमेशा खेलकूद, घूमना-फिरना, उधम मचाना ही अच्छा लगता है।

इसी तरह जैसे परिवार के मुखिया को घर के संचालन और भरण-पोषण के लिए कार्य करके कमाना जरूरी होता है। अगर घर का मुखिया असमर्थ हो जाए या किसी कारणवश बेबस हो जाए तो परिवार के युवकों का कार्य करना मजबूरी हो जाता है।

इसी प्रकार कुछ लोग प्रौढ़ या वरिष्ठ नागरिक होने पर किसी समाज में, संगठन में मजबूरी के कारण आ जाते हैं परन्तु कुछ बहुत जरूरी भी होते हैं; किसी को केवल समय व्यतीत करना होता है और किसी को समय का सदुपयोग।

एक और तरह का बन्धन भी होता है जिसमें बंधकर भी मनुष्य स्वछन्द ही रहता है। वह है प्यार का बन्धन। प्यार का बन्धन केवल रक्षाबन्धन के त्योहार तक ही सीमित नहीं है। यह देश की रक्षा, परिवार की रक्षा, समाज की सुरक्षा असामाजिक कुरीतियों से रक्षा आदि-आदि अन्य अनगिनत कृत्यों में शामिल रहता है।

आज समय की पुकार है कि हम सभी स्वतंत्र होने के लिए, अपने जीवन को सुरक्षित करने के लिए, मानवता को बचाने के लिए सबसे पहले एक संकल्प लें। यह संकल्प लें कि हमें अपने शरीर की सुरक्षा करनी है। नित्यप्रति व्यायाम करना है। इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ेगी और किसी भी प्रकार की बीमारी का संक्रमण भी दूर रहेगा।

❑ विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 224

माया जाल में फंस के बन्दा पल पल हो हैरान फिरे।
वैर विरोध और नफ़रत निन्दा इसमें जग ग़ल्तान फिरे।
झूठी दुनिया झूठी माया झूठा यह जग सारा है।
साधजनों के चरनों द्वारा इस से पार उतारा है।
सत्गुर बड़ा सहारा लोगो बन्दे का रखवाला है।
कहे अवतार वही नर ऊँचा जो गुर का मतवाला है।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह दुनिया झूठी माया का रूप है। संसार और संसार की माया दोनों झूठे हैं। झूठ के इस मायाजाल में फंसकर इन्सान पल-पल हैरान होता है। उसकी हैरानी का कारण झूठी माया के झूठे प्रभाव में फंसना है। इन्सान माया को सच मान बैठता है। जो पल-पल बदलने वाली है, उसे हमेशा साथ निभाने वाला मान लेता है। इस मायाजाल के प्रभाव के कारण इन्सान प्रेम न करके नफ़रत को जीवन का अंग बना लेता है। जाति-पाति, धर्म-सम्प्रदाय, रंग-नस्ल आदि के मिथ्या आधार को लेकर एक-दूसरे से नफ़रत करता है। इन्सान को जो बहुमूल्य मानव जीवन प्रेम करने के लिए मिला था उसे नफ़रत करने में लगाता चला जाता है। नफ़रत से वैर उत्पन्न होता है, एक-दूसरे के प्रति विरोध की भावना बढ़ती है। इस प्रकार इन्सान माया के जाल में उलझता चला जाता है। जितना वह मायाजाल से निकलना चाहता है, सही दिशा में प्रयास न करने के कारण, उतना-उतना और उलझता जाता है। इसीलिए संतों-महात्माओं ने मायाजाल को पल-पल हैरान करने वाला बताया है और संत की शरण में आकर इससे बचने का प्रयास करने को कहा है। निन्दा-नफ़रत में गल्तान होने से इन्सान को केवल सद्गुरु की कृपा ही बचा सकती है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि इन्सान सबसे पहले इस बात को स्वीकार करे कि यह दुनिया, यह माया यहाँ तक कि यह सारा जग झूठा है। झूठे संसार से सच की आशा नहीं की जा सकती। सन्तजनों के चरणों में आकर, इनकी शरणागति स्वीकार करके ही पार उतारा हो सकता है। अन्य सारे उपाय व्यर्थ हैं। साधजनों के चरणों का आसरा लेने का अर्थ है इनकी बात को स्वीकार करना, इनकी मत पर चलना। अपनी मत अपनी बुद्धि की सीमा को समझना और स्वीकार करना सबसे ज्यादा आवश्यक और महत्वपूर्ण है। भवसागर से पार उतारा इसी के द्वारा होता है। माया पर भरोसा रखकर या माया का आधार लेकर नहीं।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि ऐ दुनिया के लोगों इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि सद्गुरु का सहारा संसार में सबसे बड़ा सहारा है। यह सहारा ही मानव का सच्चा रखवाला है। इस सहारे को प्राप्त करने के लिए गुरु की मत अपना लो। गुरु के मतवाले बन जाओ। अगर मायाजाल से बचना है; वैर-विरोध, निन्दा-नफ़रत से छुटकारा पाना है तो सद्गुरु की शरण में आ जाओ। गुरमत अपनाकर गुरमत वाले बन जाओ।

मानसून

मानसून शब्द की उत्पत्ति

'मानसून' शब्द की उत्पति अरबी भाषा के 'मौसिम' (Mawsim) फिर मलयाली भाषा के 'मोनसिन' (Monsin) शब्द से हुई है, जिसका अभिप्राय 'मौसम' से है। दरअसल अरबवासी मौसम को हवाओं के नाम से पुकारते थे, क्योंकि उनके यहाँ वर्षभर एक-सा मौसम रहता है।

मानसून किसे कहते हैं?

मानसून मूलतः हिन्द महासागर एवं अरब सागर की ओर से भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आनी वाली हवाओं को कहते हैं जो भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि में भारी वर्षा कराती हैं। ये ऐसी मौसमी पवन होती हैं, जो दक्षिणी एशिया क्षेत्र में जून से सितंबर तक, प्रायः चार माह सक्रिय रहती है।

मानसून पूरी तरह से हवाओं के बहाव पर निर्भर करता है। आम हवाएं जब अपनी दिशा बदल लेती हैं तब मानसून आता है। जब ये ठंडे से गर्म क्षेत्रों की तरफ बहती हैं तो उनमें नमी की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण वर्षा होती है।

भारत की जलवायु गर्म है, इसलिए यहाँ पर दो तरह की मानसूनी हवाएं चलती हैं। जून से सितंबर तक चलने वाली मानसूनी हवाएं दक्षिणी पश्चिमी मानसून कहलाती हैं जबकि सर्दी में चलने वाली मानसूनी हवा, जो मैदान से सागर की ओर चलती है, उसे उत्तर-पूर्वी मानसून कहते हैं। यहाँ पर अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से ही होती है।

सामान्य मानसून के फायदे

खाद्यान्न उत्पादन बढ़ेगा – बारिश अच्छी होने से कृषि पर सबसे अच्छा प्रभाव पड़ता है। भारत में कृषि का अर्थव्यवस्था में बहुतायत योगदान है, इसलिए पूरी अर्थव्यवस्था को मानसून मजबूती प्रदान करता है।

बिजली संकट कम होगा – मानसून के चार महीनों में झमाझम बारिश से नदियों, जलाशयों का जलस्तर बढ़ता है। इससे बिजली उत्पादन अच्छा रहता है।

पानी की कमी दूर होगी – अच्छे मानसून से पानी की समस्या का भी काफी हद तक समाधान होता है। एक तो नदियों, तालाबों में पर्याप्त पानी हो जाता है। दूसरे, भूजल का भी पुनर्भरण होता है।

गर्मी से राहत – मानसून की बारिश जहाँ एक ओर खेती-बाड़ी, जलाशयों, नदियों को पानी से लबालब कर देती है, वहीं दूसरी ओर भीषण गर्मी से तप रहे देश को भी गर्मी से राहत प्रदान करती है।

– साभार

बाबा अवतार सिंह जी महाराज के दिव्य वचन

★ सच की रंगत के लिए जरूरी है सत्संग।

★ भक्त और भक्ति की महत्ता हर युग में रही है।

★ प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो किसी को भी जीत सकती है।

★ जो हरि के रंग में रंगे हुए हैं उनमें ही पवित्रता और पावनता है।

★ भक्ति हमें नि:स्वार्थ होना सिखाती है, भक्त अपने लिए नहीं दूसरों के लिए सोचता है।

★ दुख अज्ञानता का नाम है जैसे अंधेरा कोई चीज नहीं। इसी प्रकार दुख भी कोई चीज नहीं। प्रकाश हो तो अंधेरा और ज्ञान हो तो दुख नहीं होता।

★ भक्त सद्गुरु की आज्ञा मानते हैं और अपने आपको अर्पित करके सद्गुरु के हुक्म में ही प्रसन्न रहते हैं।

निरंकारी राजमाता जी के दिव्य वचन

★ बिना किसी आशा के जो सत्संग करता है वह ही उत्तम भक्त है।

★ प्रभु का ध्यान बना रहेगा तो यह मन शान्त रहेगा।

★ सुख अध्यात्म में है सांसारिक पदार्थों में नहीं।

★ जिस प्रकार नदी अपना पानी स्वयं नहीं पीती, पेड़ अपने फल नहीं खाते। इसी प्रकार सन्त भी परोपकारमय जीवन जीते हैं। वे अपने परोपकारी कार्यों का अभिमान नहीं करते बल्कि परोपकार उनके व्यवहारिक जीवन का हिस्सा होता है, जिससे वे अभिमान से बचे रहते हैं।

माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

★ हम अगर हर वक्त दूसरों की निन्दा करने और गलतियां निकालने में ही इतना समय बिताते रहेंगे तो हमें खुद अपने आप को सुधारने का समय कब मिलेगा।

★ गुरसिख का कर्म ही उसकी पहचान है और सद्गुरु की शिक्षाओं पर चलना ही उसका जीवन।

★ हमारे बोल और कर्म दोनों एक जैसे हों।

★ जो दूसरों को निरंकार-प्रभु-परमात्मा और सेवा, सुमिरण, सत्संग के साथ जोड़ते हैं, वे खुद भी ऊँचाईयों की तरफ जाते हैं और दूसरों को भी लेकर जाते हैं।

– संकलनकर्ता : रीटा (दिल्ली)

जानकारी : विभा वर्मा

आम स्वाद ही नहीं सेहत भी सुधारता है

दोस्तो! आम से तुम परिचित तो हो ही। बच्चे, जवान तथा वृद्ध सभी इसके मस्त स्वाद के दीवाने हैं। कष्टकारी गर्मी से जहाँ सभी बेचैन एवं व्यग्र रहते हैं वहीं आम सबकी कष्ट एवं बेचैनी का हरण कर मन को प्रसन्न्ता एवं उल्लास से भर देता है। इसके नाम से ही हमारे दिलो-दिमाग में मिठास एवं खटास के अनेक सम्मिश्रण के तरह-तरह के स्वाद उभरने लगते हैं एवं हमारी नासिका में आमों की मादक गंध भरकर हमें मदमस्त करने लगती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जो कुछ हम खाते हैं वह आठ घंटे में पचकर ही शर्करा बनता है तभी हमारा शरीर इसका उपयोग कर पाता है। पर बच्चो, क्या तुम्हें मालूम है कि यह शर्करा पके आम में स्वाभाविक रूप से रहती है। अतः आम के शरीर में पहुँचते-पहुँचते शरीर इसका उपयोग आरम्भ कर देता है एवं हमें उससे शक्ति आठ घंटे के बजाय तुरन्त ही मिलने लगती है। जिस प्रकार तुम्हारे काम करते रहने या खेलते-कूदते रहने से तुम्हारा शरीर थक जाता है उसी प्रकार शरीर के अन्दर पाचन शक्ति जो बराबर भारी गरिष्ठ चीजें पचाते-पचाते थक गई होती हैं वे पाचन के भारी काम से छुट्टी पा लेती हैं। जैसे तुम्हें आराम के बाद ताजगी आ जाती है वैसे ही पाचन प्रभावी भी धीरे-धीरे आराम के बाद सशक्त होकर पूर्व शक्ति प्राप्त कर तरोताजा हो उठती है। आधुनिक खोजों से पाया गया कि आम में लोहा, तांबा, फास्फोरस, कैल्शियम, पोटेशियम, मैगनीशियम क्लोराइड आदि खनिजों के अलावा सभी कॉम्प्लेक्स विटामिन तथा विटामिन 'ए' 'डी' 'ई' 'सी' भी बहुतायत से मिलता है। शरीर के लिए आवश्यक एंजाइम तथा अमीनो एसिड भी आम में पाये जाते हैं। सभी फलों से अधिक विटामिन 'ए' आम में ही होता है। यह फल आँखों के लिए वरदान है। एक आदमी को नित्य 5000 अन्तर्राष्ट्रीय इकाई विटामिन 'ए' चाहिए। जो केवल 100 ग्राम आम में ही मिल जाता है। 'रतौंधी' में चूसने वाला आम ज्यादा फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन 'सी' भी होता है जो तुम्हारे दांतों को मजबूती प्रदान करता है। यदि तुम्हारा शरीर दुबला-पतला है तो यह आम तुम्हारे लिए किसी टॉनिक से कम नहीं होगा।

दोस्तों, इसकी गुठली भी बहुत गुणकारी होती है। इसीलिए तो कहावत बन गई कि 'आम के आम गुठलियों के भी दाम।'

बाल कविता :

डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

आए बादल

बीत गया गर्मी का मौसम,
उमड़-उमड़ कर आए बादल।
झूम उठे सब बाग बगीचे,
नभ ने जब बरसाया जल।

गमले में गेंदा, गुलाब भी,
खुश हो खुशबू बिखराते।
नाच रहे हैं मोर मस्त हो,
पशु पक्षी सब हर्षाते।

टप-टप-टप बरसे पानी,
बूंद-बूंद से बनी लड़ी।
कैद हुए सब घर के अंदर,
वर्षा की फिर लगी झड़ी।

कविता : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

वर्षा रानी

वर्षा रानी, वर्षा रानी,
तुम लाती हो पानी।

आती हो तब अच्छा लगता,
बिना तुम्हारे खाली-खाली।

लगता है सब सूना-सूना,
बजती न चैन की ताली।

बिन तुम्हारे हम अधूरे,
तुम्हारे आने से सपने पूरे।

आती हो जब हमारे द्वार,
हो पाता धरती का शृंगार।

बिना तुम्हारे स्वर्ग न धरती बनती,
जीवन न होता, दुनिया वीरान लगती।

ऐतिहासिक कहानी : जितेन्द्र कुमार

चन्द्रगुप्त की चतुराई

सम्राट अशोक जिस मौर्य वंश के शासक थे। उसके संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य भी एक महान शासक थे। ये प्रथम भारतीय सम्राट थे; जिन्होंने राजनीतिक दृष्टि से समस्त भारत को एक सूत्र में बांधा था। चन्द्रगुप्त मौर्य बचपन में बहुत गरीब थे। इनकी माँ मुरा दाई का काम करती थी और ये खुद चरवाहे का काम करते थे। कहा जाता है कि 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात।' यह उक्ति चन्द्रगुप्त मौर्य पर पूरी तरह फिट बैठती थी। बचपन से ही उसमें शासक के गुण विद्यमान थे। एक दिन की बात है सभी गायें चर रही थीं, बालक चन्द्रगुप्त के साथ कई चरवाहे भी वहाँ इकट्ठा थे। हर रोज की तरह उनका खेल चल रहा था। एक ऊँचे टीले पर चन्द्रगुप्त बैठा था। उसने अन्य चरवाहों में से किसी को मंत्री, किसी को सेनापति आदि बनाकर राजदरबार लगा रखा था। चरवाहों में से ही कोई फरियादी बना हुआ था। तरह-तरह के फैसले बालक चन्द्रगुप्त बड़ी आसानी से एकदम राजा की तरह सुना रहा था। बालक चन्द्रगुप्त सभी चरवाहों का प्रमुख था। वह रोज इस तरह के खेल उनके साथ खेला करता था। उस दिन जब खेल चल रहा था उसी समय चाणक्य उधर से गुजर रहे थे। यह सब देखकर चाणक्य बड़े प्रभावित हुए, वे एक ब्राह्मण की तरह बालक चन्द्रगुप्त के सामने पहुँचे। चन्द्रगुप्त ने एक राजा की भांति उन्हें सम्मान देते हुए उनसे उनकी इच्छा पूछी।

चाणक्य ने कहा– राजन! मुझे गौ चाहिए।

बालक चन्द्रगुप्त ने राजर्षि अंदाज में कहा– हे ब्राह्मण! यहाँ गाय चर रही हैं। आपको जितनी गायें चाहिएं ले लीजिए।

तभी मुरा वहाँ पहुँची। चाणक्य से बालक की ढिठाई के लिए उसने माफी मांगते हुए अपनी दीन हालत बताई।

चाणक्य ने कहा– मुरा तुम्हारा पुत्र बड़ा होनहार है। तुम परसों इसे लेकर नंद के दरबार में आना।

चाणक्य के कहे मुताबिक मुरा निश्चित समय पर चन्द्रगुप्त को लेकर दरबार में पहुँची। उसी समय अवन्ती के राजा के यहाँ से एक दूत राजा के लिए उपहार स्वरूप पिंजड़े में बन्द शेर तथा एक पत्र लेकर आया था। पत्र में लिखा था कि बिना पिंजड़े को खोले शेर को बाहर निकालना है।

राजा ने दरबार में घोषणा की कि वह कौन है जो ऐसा कर सकता है? मंत्री दरबारी सभी सन्न! किसी को कोई उपाय न सूझा।

बालक चन्द्रगुप्त अचानक कह उठा, महाराज! मुझे आज्ञा दीजिए। मैं इस शेर को पिंजड़ा खोले बिना बाहर निकाल दूंगा।

राजा ने उसे डांट दिया। तब चाणक्य ने राजा से उस बालक को एक मौका देने के लिए कहा।

''सुनो ढीठ बालक यदि तुम इस कार्य में सफल नहीं हुए तो तुम्हारा सर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।'' राजा नंद ने कहा।

बालक ने भी उसी अंदाज में कहा– 'मंजूर है' और थोड़ी-सी आग और सूखी घास मांगी। आग मिलने पर उसने घास को आग लगाकर पिंजड़े में शेर के नीचे रख दिया। थोड़ी ही देर में शेर पिघल-पिघलकर गिरने लगा क्योंकि शेर मोम का बना था।

सभी लोग बालक की बुद्धिमत्ता पर वाह-वाह कर उठे। तब चाणक्य के कहने पर राजा ने उस बालक के सारे खर्च की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए उसे पढ़ने के लिए तक्षशिला भेज दिया। यही बालक बड़ा होकर एक दिन महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य बना।

दादा जी

-चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालरा

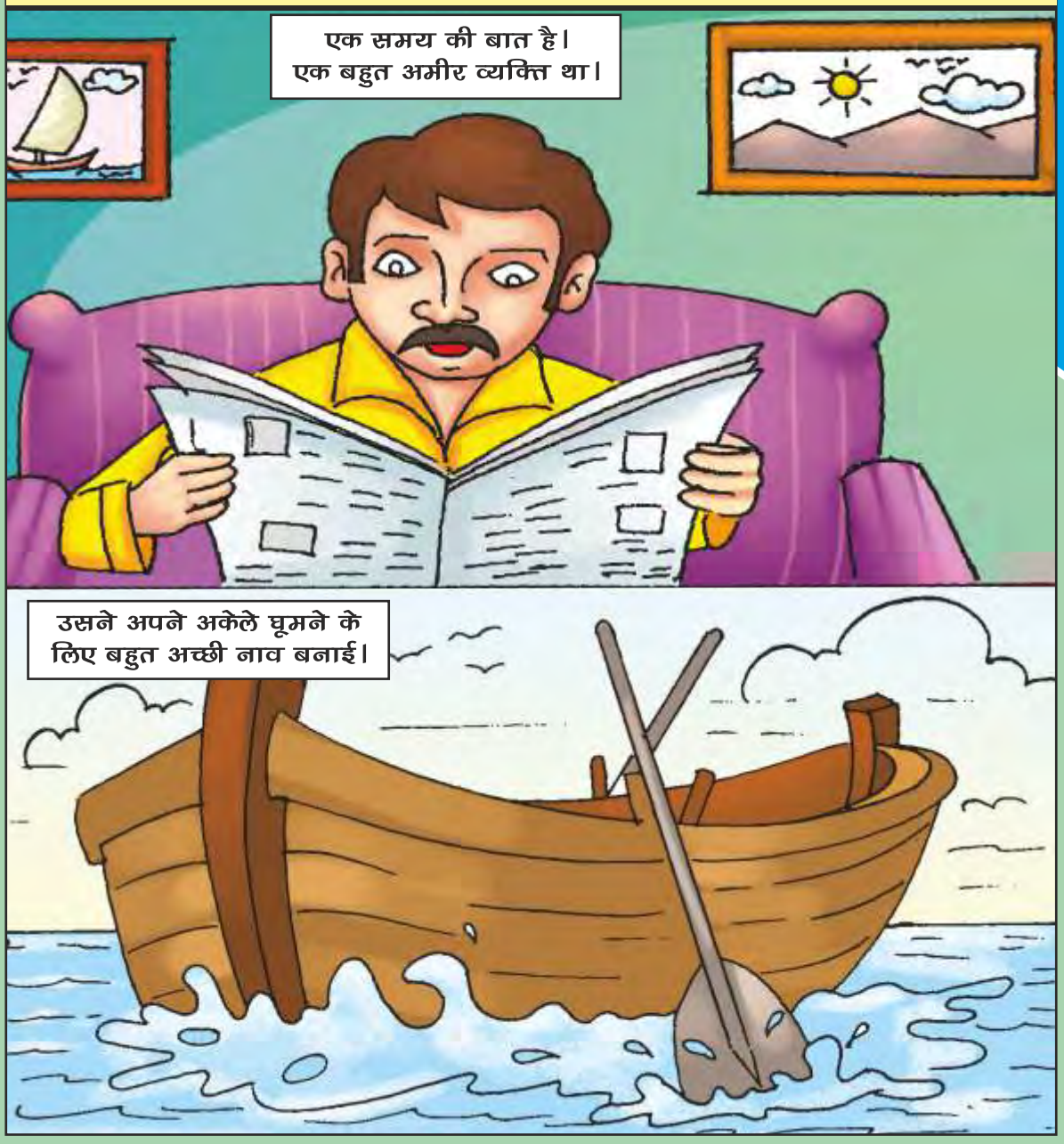

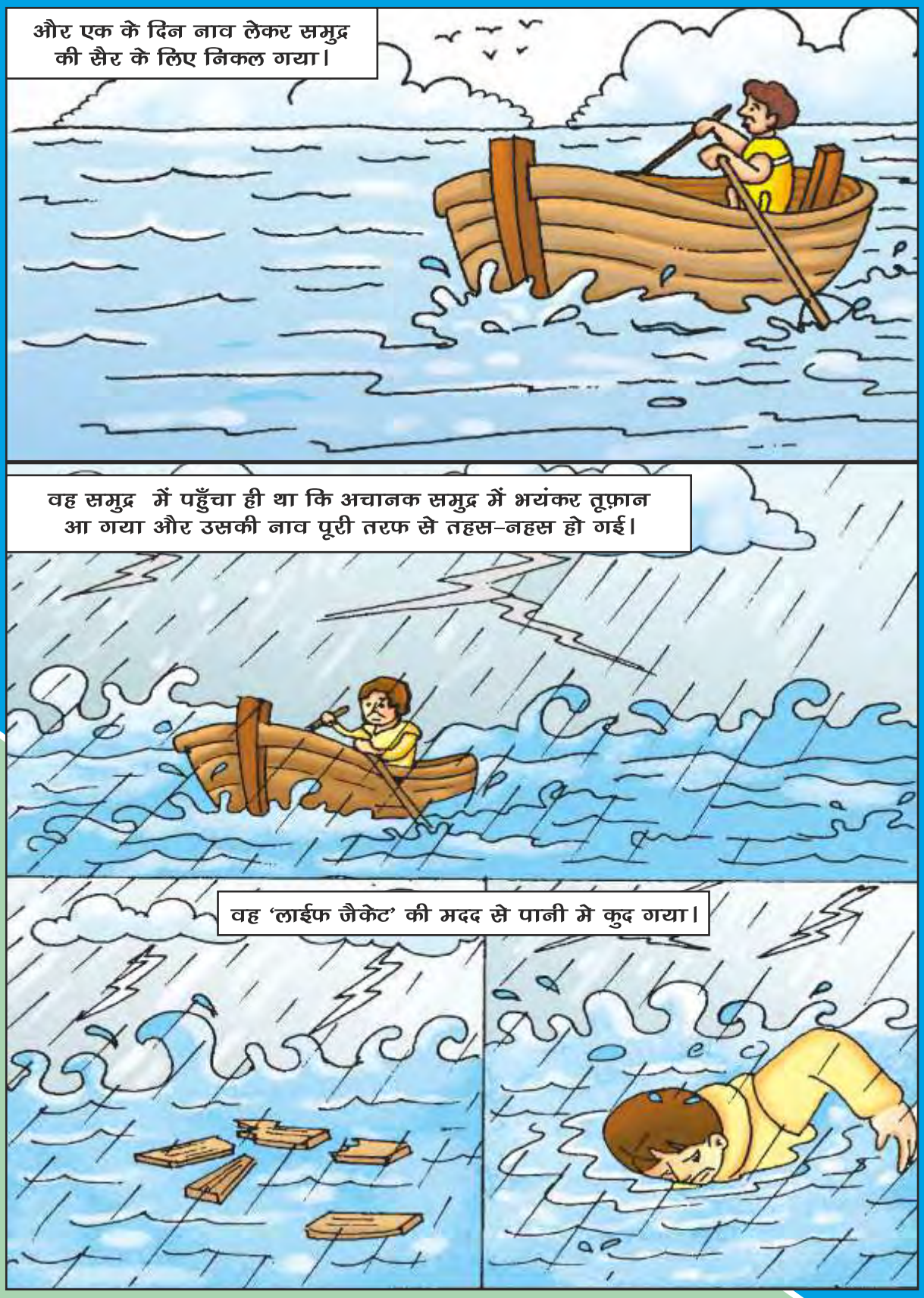
और एक के दिन नाव लेकर समुद्र की सैर के लिए निकल गया।
वह समुद्र में पहुँचा ही था कि अचानक समुद्र में भयंकर तूफ़ान आ गया और उसकी नाव पूरी तरफ से तहस-नहस हो गई।
वह 'लाईफ जैकेट' की मदद से पानी मे कुद गया।

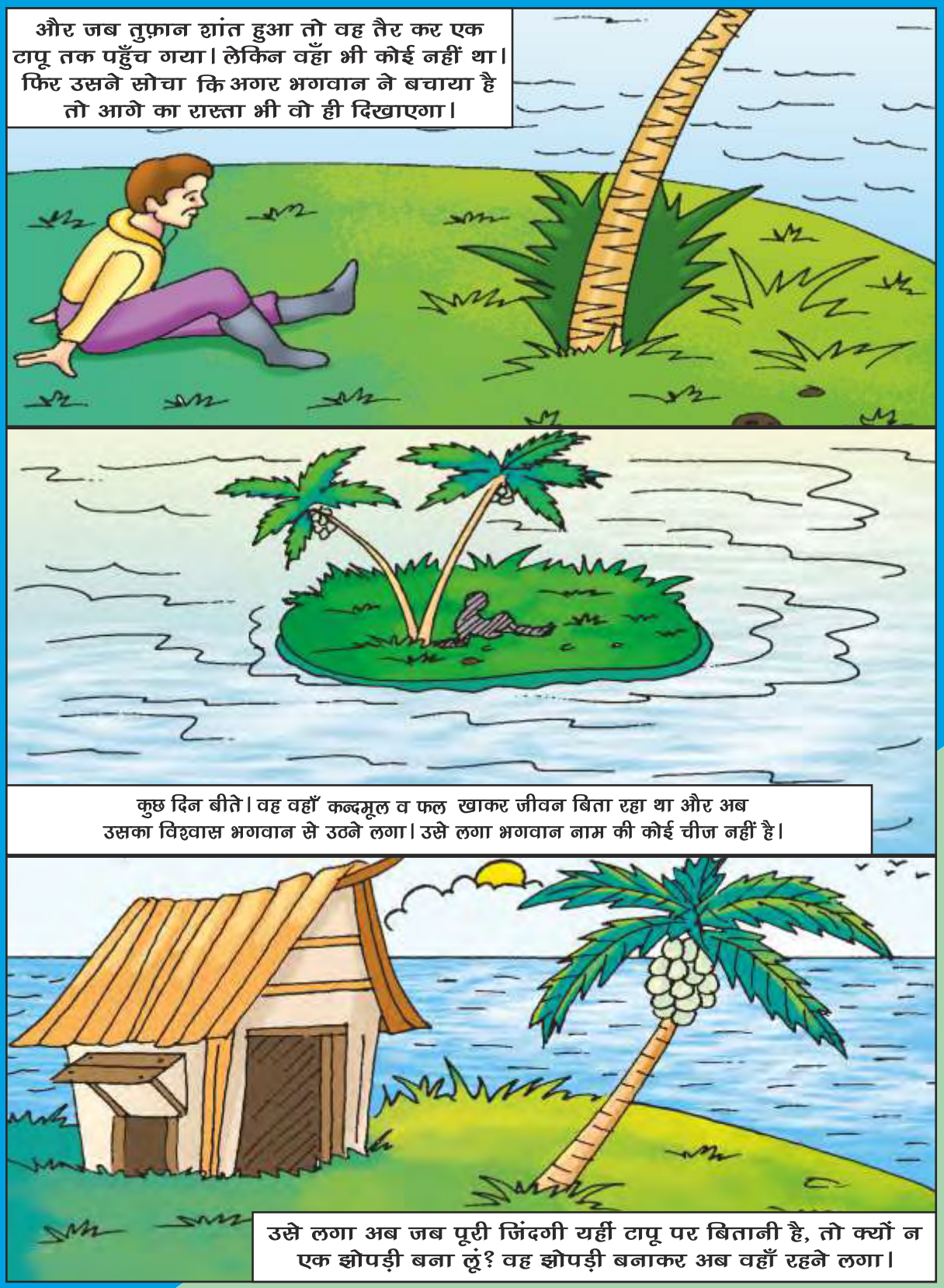
और जब तुफ़ान शांत हुआ तो वह तैर कर एक टापू तक पहुँच गया। लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। फिर उसने सोचा कि अगर भगवान ने बचाया है तो आगे का रास्ता भी वो ही दिखाएगा।
कुछ दिन बीते। वह वहाँ कन्दमूल व फल खाकर जीवन बिता रहा था और अब उसका विश्वास भगवान से उठने लगा। उसे लगा भगवान नाम की कोई चीज नहीं है।
उसे लगा अब जब पूरी जिंदगी यहीं टापू पर बितानी है, तो क्यों न एक झोपड़ी बना लूं? वह झोपड़ी बनाकर अब वहाँ रहने लगा।

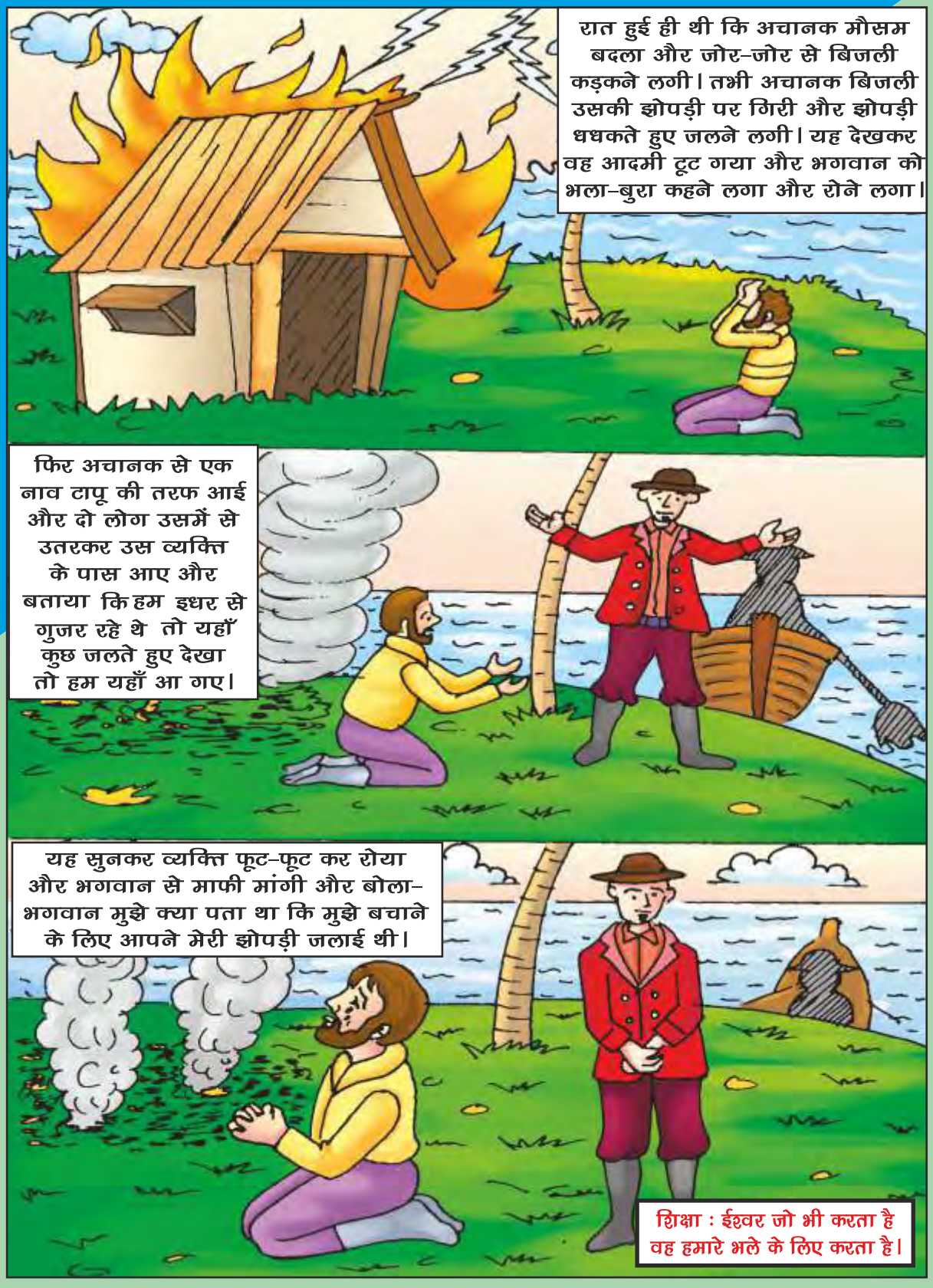
रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला और जोर-जोर से बिजली कड़कने लगी। तभी अचानक बिजली उसकी झोपड़ी पर गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया और भगवान को भला-बुरा कहने लगा और रोने लगा।
फिर अचानक से एक नाव टापू की तरफ आई और दो लोग उसमें से उतरकर उस व्यक्ति के पास आए और बताया कि हम इधर से गुजर रहे थे तो यहाँ कुछ जलते हुए देखा तो हम यहाँ आ गए।
यह सुनकर व्यक्ति फूट-फूट कर रोया और भगवान से माफी मांगी और बोला- भगवान मुझे क्या पता था कि मुझे बचाने के लिए आपने मेरी झोपड़ी जलाई थी।
शिक्षा : ईश्वर जो भी करता है वह हमारे भले के लिए करता है।

बड़ी सफलता नासा ने खोजी दूसरी पृथ्वी, जहाँ मौजूद है पानी

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा (NASA) के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के आकार का रहने योग्य ग्रह खोज लिया है। खास बात यह है कि इसकी सतह पर तरल पानी भी मौजूद है। नासा ने अमेरिकन एस्ट्रनॉमिकल सोसाइटी की 235वीं बैठक में इसका खुलासा किया। नासा ने बताया कि इसकी दूरी करीब 100 प्रकाशवर्ष है। आइए जानते हैं इस ग्रह के बारे में।

नासा के ट्रांजिटिंग एक्सोप्लैनेट सर्वे सैटेलाइट (TESS) और स्पिट्जर स्पेस टेलीस्कोप (Spitzer Space Telescope) ने इस ग्रह को खोजा है। नासा के वैज्ञानिकों ने इस ग्रह का नाम दिया है TOI 700D। यह सूरज जैसे एक तारे TOI 700 के चारों तरफ चक्कर लगा रहा है। TOI 700 का वजन हमारे सूरज से आधा है और इसका तापमान भी 40 फीसदी कम है।

TOI 700 के चारों तरफ कुल मिलाकर तीन ग्रह चक्कर लगा रहे हैं। इनमें से दो ग्रह TOI 700 से काफी दूर हैं, लेकिन TOI 700D इतना नजदीक है कि इस पर जीवन संभव है। अन्य दोनों ग्रहों में से एक पथरीला और दूसरा गैसों से भरा हुआ है।

नासा के वैज्ञानिकों के मुताबिक यह ग्रह डोराडो स्वार्डफिश नक्षत्र में स्थित है। जो हमारी आकाशगंगा के दक्षिण में स्थित है। हालांकि, नासा के वैज्ञानिक अभी TOI 700D के वातावरण और सतह के तापमान और बनावट का मॉडल तैयार कर रहे हैं। अभी तक यह नहीं पता चल पाया है कि यह ग्रह किस चीज से बना है।

TOI 700D ग्रह हमारी पृथ्वी के मुकाबले 20 फीसदी ज्यादा बड़ा है। यह अपने सूरज यानी TOI 700 का 37 दिनों में एक चक्कर लगाता है। इसे अपने सूरज से 86 फीसदी ऊर्जा मिलती है।

कविता : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

रक्षाबन्धन

भरता है मन में उजियाला,
धागों का त्योहार निराला।
हर सावन में आने वाला,
भाया है रक्षाबन्धन।।

मीठी-मीठी बातें करता,
घर-आंगन खुशियों से भरता।
नेहों के गुलदस्ते धरता,
आया है रक्षाबन्धन।।

राखी बांधे, सजी कलाई,
हँसते गाते बहन-भाई।
अच्छी-अच्छी ढेर मिठाई,
लाता है रक्षाबन्धन।।

चमकी सबकी आज कलाई,
रक्षा वचन की याद दिलाई।
पवित्र-प्रेम संदेशा लाई,
आई देखो राखी आई।।

कविता : डॉ. ओम पंकज

वतन हमारी जान है

वतन हमारी जान है वतन के लाल हम।
वतन हमारी शान है वतन के बाल हम।

किसी के बहकावे में हम न आने वाले हैं।
कोई परख ले चाहे जैसे वतन की चाल हम।

प्रहरी हम सीमाओं के चौकस नज़र रखें।
लड़ने को हैं तैयार भिड़ने को काल हम।

वैसे अमन के रास्ते पर चलने वाले हैं।
लेकिन नहीं बुजदिल हैं साहस की ढाल हम।

अपनी ही बाजुओं के बल ये अपना देश है।
इसका तिरंगा मान है इसकी मिसाल हम।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करता है

विटामिन 'सी'

विटामिन 'सी' शरीर के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इसे 'एस्कॉर्बिक एसिड' के नाम से भी जाना जाता है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन से सर्दी, खांसी व अन्य तरह के इन्फेक्शन होने का खतरा कम हो जाता है। इतना ही नहीं, यह अनेक प्रकार के कैंसर से भी बचाव करता है और स्वस्थ रखता है। हमारे शरीर

की कार्यप्रणाली को सुचारु रूप से चलाने के लिए विटामिन 'सी' अति आवश्यक पोषक तत्वों में से एक है। शरीर के सभी प्रमुख अंगों जैसे ब्रेन, फेफड़े, अग्नाशय और गुर्दे इत्यादि को सही ढंग से काम करने के लिए विटामिन 'सी' की जरूरत होती है। यह शरीर में विटामिन 'ई' की सप्लाई को पुनर्जीवित करता है और आयरन के अवशोषण की क्षमता को भी बढ़ाता है। यह एक एंटी-एलर्जिक व एंटी-ऑक्सीडेंट के रूप में भी काम करता है और दांत, मसूड़ों व आँखों को भी स्वस्थ रखने में भी मदद करता है।

कमी के लक्षण : अक्सर सर्दी-जुकाम होना, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, थकान, कमजोरी और बुखार, रोग प्रतिरोधक क्षमता का कमजोर पड़ना, थकावट, अचानक मसूड़ों से खून आना, मसूड़ों में सूजन, अचानक वजन घटना, बार-बार इंफेक्शन होना, सांस लेने में तकलीफ, पाचन समस्याएं, ड्राई बाल होना, त्वचा की असमान रंगत, घाव का देरी से भरना आदि समस्याएं विटामिन 'सी' की कमी के लक्षण माने जाते हैं।

इनसे मिलता है विटामिन 'सी' : विटामिन 'सी' को अपने खान-पान में शामिल करने के लिए आप खट्टे रसदार फलों का सेवन कर सकते हैं। टमाटर, नारंगी, नीबू, संतरा, अंगूर, अमरुद, सेब, जामुन, कीवी, ब्रोकोली आदि में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लीची, स्प्राउट्स, लाल, पीली और हरी शिमला मिर्च, गोभी, पालक, स्ट्रॉबेरीज, पपीता में भी विटामिन 'सी' पाया जाता है।

यह भी ध्यान रहे : खाद्य पदार्थों को काटकर अधिक समय तक रखने और गर्म करने से उनमें उपस्थित विटामिन 'सी' में कुछ बदलाव हो सकते हैं और विटामिन 'सी' का प्रभाव कम हो सकता है। इसलिए फलों और सब्जियों को कच्चा या हल्का पकाकर खाना चाहिए तथा खाने के बहुत समय पहले से काटकर नहीं रखना चाहिए।

प्रस्तुति : प्रभा

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

नहीं चाहिए ऐसा उपहार

रोहित और रवि दोस्त थे। दोनों की एक-एक बहन थी। दोनों ही अपनी-अपनी बहनों से छोटे भी थे। रोहित एक साधारण परिवार से था। जबकि रवि एक धनवान परिवार से था।

एक दिन रवि रोहित को लेकर खिलौनों के एक बड़े 'शोरूम' में गया। रवि ने रोहित को बता दिया था कि उसने अपनी दीदी प्रॉमिला के जन्मदिन पर उपहार खरीदना है। रोहित रवि के साथ इतने बड़े शोरूम में पहली बार आया था। वहाँ बड़ी संख्या में विदेशी और महंगे खिलौने सजे हुए थे। रवि कभी इस तरफ और कभी उस तरफ खिलौनों को उलट-पलट कर देख रहा था लेकिन उसे कोई खिलौना पसन्द नहीं आ रहा था। उसे याद आया कि उसकी दीदी गुड़ियों को पसन्द करती है। वह शीशे पर सजी बार्बी डॉल की पंक्तियों को उठा-उठाकर देखने लगा। आखिर उसे एक बार्बी डॉल पसन्द आ गई। उसकी आंखें इधर-उधर घूम रही थीं। मानो वह जीवित हो। रवि ने सेल्समैन से उसकी कीमत पूछी। सेल्समैन ने उसकी कीमत एक हजार रुपये बताई। रवि ने जेब से पांच-पांच सौ रुपये के दो नोट निकालकर दे दिये। उसने बार्बी डॉल को एक गिफ्ट पेपर में पैक करवाया और रोहित के साथ वापिस आ गया।

घर आकर रोहित उधेड़बुन में पड़ गया। अगले सप्ताह उसकी दीदी रमा का भी तो जन्मदिन आ रहा है। वह सोचने लगा, 'यदि मैं भी अपनी दीदी को इतना महंगा उपहार लेकर दूं तो वह कितनी खुश होगी। इतनी महंगी बार्बी डॉल

तो उसने आज तक सपने में भी नहीं देखी। जब मैं उसे जन्मदिन पर भेंट करूंगा तो मारे खुशी के वह चिल्ला उठेगी। उसकी तो आंखें ही चुंधियां जायेंगी। कितने प्यार से मुझे गले लगायेंगी... ।' यह सोचकर उसके चेहरे पर रौनक सी आ गई लेकिन दूसरे ही क्षण वह फिर उदास हो गया। उदासी का कारण था इतने पैसों का अभाव। उसकी गुल्लक में तो केवल सौ, डेढ़ सौ रुपये ही थे। लेकिन उसने निश्चय कर लिया था कि कुछ भी हो वह भी अपनी दीदी को उतनी ही महंगी डॉल खरीदकर देगा जितनी महंगी रवि ने खरीदी है। वह कोई तरकीब सोचने लगा।

अगले दिन उसकी बुआजी मिलने के लिए आई। एक-दो बार जब बुआजी ने रोहित के सामने पर्स खोला तो उसने गौर से पर्स के अन्दर देखा। रोहित ने अनुमान लगा लिया था कि बुआजी के पर्स में अच्छे-खासे रुपये हैं। अगले दिन बुआजी चली गई।

जब रोहित की दीदी के जन्मदिन में केवल एक ही दिन शेष रह गया तो वह अकेला ही शाम को उसी शोरूम पर गया। उसने वैसी ही महंगी बार्बी डॉल खरीदी जैसी रवि ने खरीदी थी। उसने उस उपहार को पैक करवा लिया। फिर खुशी-खुशी घर आ गया। उसने इसके बारे में रमा को कानों-कानों खबर तक न होने दी। उसने पैक किया उपहार अन्दर एक जगह पर छिपा दिया।

अगले दिन सुबह होते ही वह जल्दी उठ गया। जितने उत्साह में रोहित दिखाई दे रहा था उतने उत्साह में रमा नहीं थी। रोहित ने उठते ही रमा दीदी को 'दीदी, जन्मदिन मुबारक हो' कहा। रमा ने बड़ी खुशी और मुस्कुराहट से उसका जवाब दिया और गले लगाया।

जन्मदिन शाम को मनाया जाना था। रमा ने अपनी दो-चार सहेलियों को बुलाया था। जब शाम को रमा का जन्मदिन मनाया जाने लगा तो अचानक रोहित अन्दर से 'जन्मदिन मुबारक दीदी, जन्मदिन मुबारक हो' चिल्लाता हुआ आया। उसके हाथों में पैक किया हुआ उपहार था। उसने वह उपहार रमा को पकड़ा दिया।

'अरे यह क्या? इस पैकेट में कौन-सा उपहार ले आए हो तुम? कहाँ से लाए हो? मुझे तो पता तक नहीं चलने दिया?' रमा ने कई सवाल कर दिये।

'बस दीदी यह मत पूछो। अब खोलकर देखो।' रोहित ने कहा।

रमा ने पैकेट खोला तो उसमें इतनी सुन्दर बार्बी डॉल देखकर वह चकित रह गई। उसने सबके सामने पहले तो रोहित का धन्यवाद किया लेकिन मन ही मन उसे कोई चिन्ता सताने लगी।

जब चाय वगैरह पीकर रमा की सहेलियां चली गई तो रमा ने डॉल को ध्यानपूर्वक देखा। डॉल की पीठ पर एक छोटी-सी स्लिप चिपकी हुई थी जिस पर एक हजार रुपये लिखे था। जल्दबाजी में रोहित ने उस स्लिप की ओर ध्यान ही नहीं दिया था।

रमा ने रोहित को बुलाया और कहा– 'रोहित,

एक हजार रुपये की आई है न यह डॉल?' रोहित ने मुस्कुराते हुए 'हाँ' में सिर हिला दिया। रमा ने उसके हाथ में उपहार लौटाते हुए कहा– 'मुझे यह उपहार मंजूर नहीं है। तुम्हारे पास इतने रुपये कहाँ से आए? सच-सच बता।'

रोहित यह सुनते ही जैसे सन्न रह गया। उसे काटो तो खून नहीं। उसे लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो। आखिर रोहित को सारी बात सच बतानी पड़ी। उसने यह भी बताया कि जब रात को उसने बुआजी के पर्स में से रुपये चोरी किए थे तो वह बुरी तरह कांप रहा था और डर भी रहा था क्योंकि उसने पहले कभी ऐसा काम नही किया था।

और देखा न, अब तुम मुझसे आंख तक नहीं मिला रहे हो। यह बुरा काम करने की निशानी है।

रोहित ने कान पकड़ लिए और बोला– 'दीदी, मैंने आपको खुश करने के लिए ऐसा किया था।'

रमा बोली– 'रोहित, मुझे ऐसी खुशी की जरूरत नहीं है जो मेरे भाई को गलत रास्ते पर जाने के लिए उकसाए। हम कल को यह उपहार वापिस लौटाकर आयेंगे और फिर तुम बुआजी से माफी मांगोगे। भाई-बहन में प्यार महंगे उपहारों से नहीं बल्कि सच्चे मन से बढ़ता है। सच्चा प्यार लाखों करोड़ों रुपये के उपहारों से कहीं ज्यादा कीमती होता है। ऐसा उपहार कभी किसी को खुशी नहीं दे सकता।'

अगले दिन दोनों भाई-बहन शोरूम पर उपहार लौटाने के लिए जा रहे थे।

बाल कविता : शिवनारायण सिंह

झम झम बरसा पानी रे

उमड़-घुमड़कर आये बदरवा,
झम-झम बरसा पानी रे।
गाने लगा किसान मगन हो,
धरती है गुड़धानी रे।।

कल-कल-कल संगीत छेड़ती,
नदिया की हर लहर-लहर।
रिमझिम बरखा के चर्चे हैं,
गाँव-गाँव, हर शहर-शहर।।

मोरा नाचे थिरक-थिरक,
कूके कोयलिया 'कुहू-कुहू',
हरियाले वन-उपवन बोले–
आज पपीहा 'पीहू-पीहू'।।

सोंधी-सोंधी महके माटी,
मस्त निराली, मतवाली।
लगी बरसने डाल-डाल से,
जामुन रे काली-काली।।

बूंद-बूंद से भरती गागर,
सागर गहरा भर जाता।
बूंद-बूंद का मोल जानता,
वही जगत में लहराता।।

पेड़-पेड़ पड़ गये हिंडोले,
बरखा में भीगा तन-मन।
नव उमंग से हुआ आनन्दित,
सारे भूतल का कण-कण।।

प्राणी जगत : डॉ. परशुराम शुक्ल

ऑस्ट्रेलिया का अद्भुत वन्य प्राणी कंगारू

कंगारू मार्सूपियल प्रजाति का स्तनपायी प्राणी है। इस प्रजाति के पेट में एक थैली होती है तथा ये अपरिपक्व शिशु को जन्म देते हैं। कंगारू की लगभग पचास जातियां पायी जाती हैं। सभी का आकार प्रकार तथा रहन-सहन अलग-अलग होता है। कुछ भूमि पर विचरण करते हैं तो कुछ बन्दरों की तरह पेड़ों पर उछलते-कूदते हैं। इसकी सबसे छोटी प्रजाति 'मस्करैट कंगारू' है। इसका मुँह चूहे की तरह होता है तथा इसकी अधिकतम लम्बाई एक फुट होती है। 'लार्ज-ग्रे कंगारू' इस प्रजाति का सबसे बड़ा कंगारू है। इसकी लम्बाई ढाई मीटर से अधिक तथा वजन लगभग सौ किलोग्राम होता है।

कंगारू ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के विभिन्न भागों, न्यूगिनी तथा आसपास के अनेक द्वीपों में पाया जाता है। इसकी शरीर की संरचना बड़ी विचित्र होती है। इसके आगे का भाग दुबला-पतला और पीछे का भाग भारी होता है। इसकी पूँछ मोटी तथा शक्तिशाली होती है। जिसका प्रयोग यह पांचवीं टांग की तरह करता है। कंगारू की अगली टांग छोटी और कमजोर होती हैं किन्तु पिछले पैर काफी मजबूत होते हैं। कंगारू के पूरे शरीर की संरचना इस प्रकार की

होती है कि यह सरलता से लम्बी-लम्बी छलांगें लगा लेता है और उसके पेट की थैली में बच्चा सुरक्षित बना रहता है।

कंगारू एक शाकाहारी प्राणी है। इसका मुख्य भोजन जंगली घास तथा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां हैं। यह बड़ा सीधा-सादा जीव है और कभी किसी को सताता नहीं है। सामान्यतया इसे बड़े आराम से जंगल में घास चरते देखा जा सकता है। किन्तु यदि इसे कोई खतरा अनुभव होता है तो यह लम्बी-लम्बी छलांगें मारता भाग खड़ा होता है। इसकी भागने की गति पचास किलोमीटर प्रति घंटा होती है तथा यह कभी-कभी चालीस-चालीस फुट लम्बी छलांगें लगाता है।

कंगारू की आँखों की बनावट इस प्रकार की होती है कि यह अपने ठीक सामने की वस्तु को देख नहीं पाता। इसकी श्रवणशक्ति तथा घ्राण शक्ति भी बड़ी कमजोर होती है।

कंगारू की प्रजनन प्रक्रिया बड़ी अद्‌भुत होती है। इसका प्रजननकाल मात्र चार सप्ताह है। मादा कंगारू एक समय में केवल एक बच्चे को जन्म देती है। जन्म के समय इसका बच्चा अपूर्ण होता है। उसके न आंख होती है, न कान, आकार मात्र एक इंच तथा वजन पच्चीस ग्राम से भी कम होता है। मादा कंगारू के पेट में पिछली टांगों के मध्य मुलायम, रोयेंदार एक थैली होती है। मादा कंगारू जन्म के तुरन्त बाद बच्चे को अपनी थैली में रख लेती है। उसके स्तन भी थैली के भीतर ही होते हैं। कंगारू का नवजात बच्चा इतना शक्तिहीन होता है कि अपने आप स्तनपान भी नहीं कर पाता। मादा कंगारू के स्तन बच्चे के मुँह में स्वतः पहुँचकर फूल जाते हैं तथा उनसे दूध निकलने लगता है। मादा कंगारू अपने बच्चे को सात-आठ महीने इसी तरह अपने पेट की थैली में रखकर पालती है। जब बच्चा सात महीने का हो जाता है तो थैली के बाहर झांकना आरम्भ कर देता है। मादा कंगारू जब चरती है तो वह भी दो-चार पत्तियां तोड़ लेता है। कभी-कभी वह थैली के बाहर भी आ जाता है लेकिन जैसे ही आस-पास हल्की सी आहट भी होती है वह थैली में जाकर छुप जाता है। एक वर्ष तक यही स्थिति रहती है। इसके बाद वह थोड़ा बहुत स्वतंत्र रूप से विचरण करने लगता है। दो-ढाई वर्ष में कंगारू पूर्ण रूप से युवा हो जाता है।

कंगारू एक सीधा-सादा शाकाहारी प्राणी है। अतः इसे जंगल के मांसाहारी हिंसक पशुओं से सदैव खतरा बना रहता है। बड़े-बड़े जीव तो इसके शत्रु हैं ही, शिकारी कुत्तों, विषैले सर्पों तथा अनेक प्रकार के मांसाहारी पक्षियों से भी इसे बचकर रहना पड़ता है।

बालगीत : शोभा शर्मा

देश हमारा अपना

सत्य अहिंसा के प्रहरी हैं,
दुनियाभर में सच्चे।
भारत देश हमारा अपना,
हम भारत के बच्चे।।

पढ़ी राम की रामायण है,
और कृष्ण की गीता।
समरभूमि में आकर हमसे,
कभी न कोई जीता।।

छक्के छुड़ा दिये दुश्मन के,
भागे अच्छे-अच्छे।

हमने जब चाहा धरती पर,
चंदा-सूरज आए।
अपने एक इशारे पर हैं,
पर्वत शीश झुकाए।।

नहीं कभी कोई दे सकता,
आकर हमको गच्चे।

ज्ञान और विज्ञान हमारे,
आंगन आकर खेलें।
कम्प्यूटर युग से है नाता,
सभी चुनौती झेलें।।

दुर्गम पथ पर आगे बढ़ते,
भले उमर के कच्चे।

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

आजादी को कभी न भूलें

चूहा एक तिरंगा लाया,
बिल्ली ने उसको फहराया।
कुत्ते ने नव गीत सुनाया,
नया गीत सब के मन भाया।
यह प्यारा झण्डा अपना है,
इसको ऊँचा ही रखना है।
भारतवासी नेक बनेंगे,
मिल-जुलकर सब एक बनेंगे।
सपनों के झूले में झूलें।
आजादी को कभी न भूलें।

बाल कहानी : वैदेही शर्मा

ईर्ष्या का फल

तालाब में बहुत सारे मेंढक रहते थे। उन सब मेंढकों का मुखिया बहुत ही सज्जन था लेकिन उन मेंढकों में चमकू मेंढक बहुत चालाक था। वह मुखिया मेंढक से बहुत जलता था, वह मुखिया मेंढक को मार कर स्वयं मुखिया बनना चाहता था।

चमकू मेंढक मुखिया को अपनी ताकत से नहीं मार सकता था। मुखिया से सभी मेंढक बहुत प्यार करते थे। एक दिन चमकू मेंढक घूमता हुआ पास के एक जंगल में चला गया। तभी एक सांप उस पर झपटा। सांप को देखकर चमकू घबरा गया लेकिन तभी वह सम्भलकर बोला, ''अरे भाई! मुझे क्यों मार कर खाते हो? मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलता हूँ जहाँ तुम्हें सैकड़ों मेंढक खाने को मिल सकते हैं।''

चमकू की बात सुनकर सांप को लालच आ गया। सांप चमकू के साथ तालाब के पास पहुँचा। चमकू ने सांप से कहा, ''देखो! इस तालाब में सैकड़ों मेंढक रहते हैं। मैं तुम्हारे लिए रोज एक मेंढक को अपने साथ लाऊंगा। तुम उस मेंढक को मार कर खा जाना।''

सांप ने चमकू की बात मान ली। सांप वहाँ एक पेड़ के नीचे बने बिल में छिप कर बैठ गया। चमकू अगले दिन सुबह एक मेंढक के साथ वहाँ आया। तभी सांप ने झपटकर उस मेंढक को

पकड़ लिया और पलक झपकते ही निगल गया।

अगले दिन चमकू फिर एक दूसरे मेंढक को साथ लेकर आया। सांप उस मेंढक पर झपटा और उसे भी निगल गया। एक-एक करके चमकू ने आधे से अधिक मेंढक सांप के शिकार बनवा दिये। एक दिन जब सारे मेंढक समाप्त हो गए तो चमकू ने मुखिया को भी सांप का शिकार बनवा दिया।

जब सारे मेंढक समाप्त हो गये तो सांप चमकू के बेटे को निगल गया। चमकू अपने बेटे की मौत से बहुत दु:खी हुआ लेकिन उस भयंकर सांप के सामने कर भी क्या सकता था? एक दिन सांप ने चमकू को ही पकड़ लिया। चमकू ने सांप से कहा, ''मैंने तुम्हें इतने मेंढकों का शिकार कराया, अब तुम मुझे भी खा जाना चाहते हो। यह तो गलत बात है।''

''मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। अब तो तुम्हें ही खाकर पेट भरना होगा।'' सांप ने कहा।

चमकू अपने फैलाये जाल में स्वयं फंस चुका था। वह अब मरता क्या करता। सांप उसे भी निगल गया।

किसी ने सच ही कहा है कि जो व्यक्ति अपने लोगों को धोखा देता है, एक दिन उसके साथ भी धोखा होता है। चमकू अपने परिवार के साथियों को समाप्त करवा देने के बावजूद वह नहीं बच सका और उसे भी अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। •

बाल कथा : राजेश अरोड़ा

समुद्र का जल नमकीन क्यों होता है?

वर्षा का जल भूमि में गिरने पर वायुमण्डल में फैले कार्बन-डाईऑक्साइड के सम्पर्क में आने के कारण कुछ अम्लीय हो जाता है। अम्ल पृथ्वी की चट्टानों का कटाव एवं भेदन करता है तथा इनके टूटे हुए हिस्सों को आयनों के रूप में अपने साथ बहाकर ले जाता है। आयन नहरों तथा नदियों के रास्ते समुद्र में चले जाते हैं। जबकि कई विघटित आयन-जीवों द्वारा उपयोग किये जाते हैं तथा अन्य लम्बे समय के लिए छोड़ दिये जाते हैं- जहाँ समय के साथ-साथ इनकी मात्रा भी बढ़ती रहती है। समुद्री जल में क्लोराइड तथा सोडियम होता है जिससे समुद्र जल के विघटित आयनों का 90 प्रतिशत से अधिक की प्रतिपूर्ति हो जाती है। समुद्र जल में कुल विघटित नमक का लगभग 3.5 प्रतिशत है। इससे समुद्र का जल नमकीन होता है।

जल का महत्व क्या है?

यह प्रकृति का नियम है कि इन्सान बिना खाना खाए तो कई दिनों तक जिन्दा रह सकता है लेकिन बिना पानी पिए इन्सान की जिन्दगी महज दो या तीन दिन ही चल सकती है। जीवन के लिए जल कितना अधिक महत्व रखता है यह इसी बात से पता चलता है कि हमारे शरीर का अधिकतर भाग भी जल ही है। लेकिन इतना अधिक महत्व रखने वाले जल के प्रति हमारा दृष्टिकोण बेहद साधारण और गैर-जिम्मेदाराना है।

जल प्रदूषण के प्रभाव क्या हैं?

जल प्रदूषण से व्यक्ति ही नहीं अपितु पशु-पक्षी एवं मछली भी प्रभावित होते हैं। प्रदूषित जल पीने, पुनः सृजन, कृषि तथा उद्योगों आदि के लिए भी उपयुक्त नहीं है। यह झीलों एवं नदियों की सुन्दरता को कम करता है। संदूषित जल (खराब

किया हुआ जल) जलीय जीवन को समाप्त करता है तथा इसकी प्रजनन शक्ति को क्षीण करता है।

जल प्रदूषण का स्वास्थ्य पर प्रभाव क्या है?

जल जनित रोग संक्रामक रोग होते हैं जो मुख्यत: संदुषित जल से फैलते हैं। हिपेटाइटिस, हैजा, पेचिश तथा टाईफाइड आम जलजनित रोग हैं; जिनसे उष्णकटिंबधीय क्षेत्र के बहुसंख्यक लोग प्रभावित होते हैं। प्रदूषित जल के सम्पर्क से अतिसार त्वचा सम्बन्धी रोग, स्वांस की समस्याएं तथा अन्य रोग हो सकते हैं जो जलनिकायों में मौजूद प्रदूषकों के कारण होते हैं। जल के स्थिर तथा अनुपचारित होने से मच्छर तथा अन्य कई परजीवी कीट आदि उत्पन्न होते हैं जो विशेषत: उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कई बीमारियां फैलाते हैं।

जल सरंक्षण के लिए हम क्या कर सकते हैं?

- ✯ यह जाँच करें कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो।
- ✯ आपको जितनी जरूरत हो उतने ही जल का प्रयोग करें।
- ✯ पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद रखें।
- ✯ मंजन करते समय नल को, टंकी को बन्द रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें।
- ✯ नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें।
- ✯ ऐसी वॉशिंग मशीन का इस्तेमाल करें जिससे अधिक जल की खपत न हो।
- ✯ खाद्य सामग्री तथा कपड़ों को धोते समय नलों को खुला न छोड़ें।
- ✯ जल को कदापि नाली में न बहायें बल्कि उसे अन्य उपयोगों जैसे- पौधों अथवा बगीचे को सींचने अथवा सफाई इत्यादि में लाएं।
- ✯ सब्जियों तथा फलों को धोने में उपयोग किये गये जल को फूलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में किया जा सकता है।
- ✯ पानी की बोतल में अंतत: बचे हुए जल को फैंके नहीं अपितु इसका पौधों को सींचने में उपयोग करें।
- ✯ तालाबों, नदियों अथवा समुद्र में कूड़ा न फैंके।
- ✯ पानी के हौज को खुला न छोड़ें।

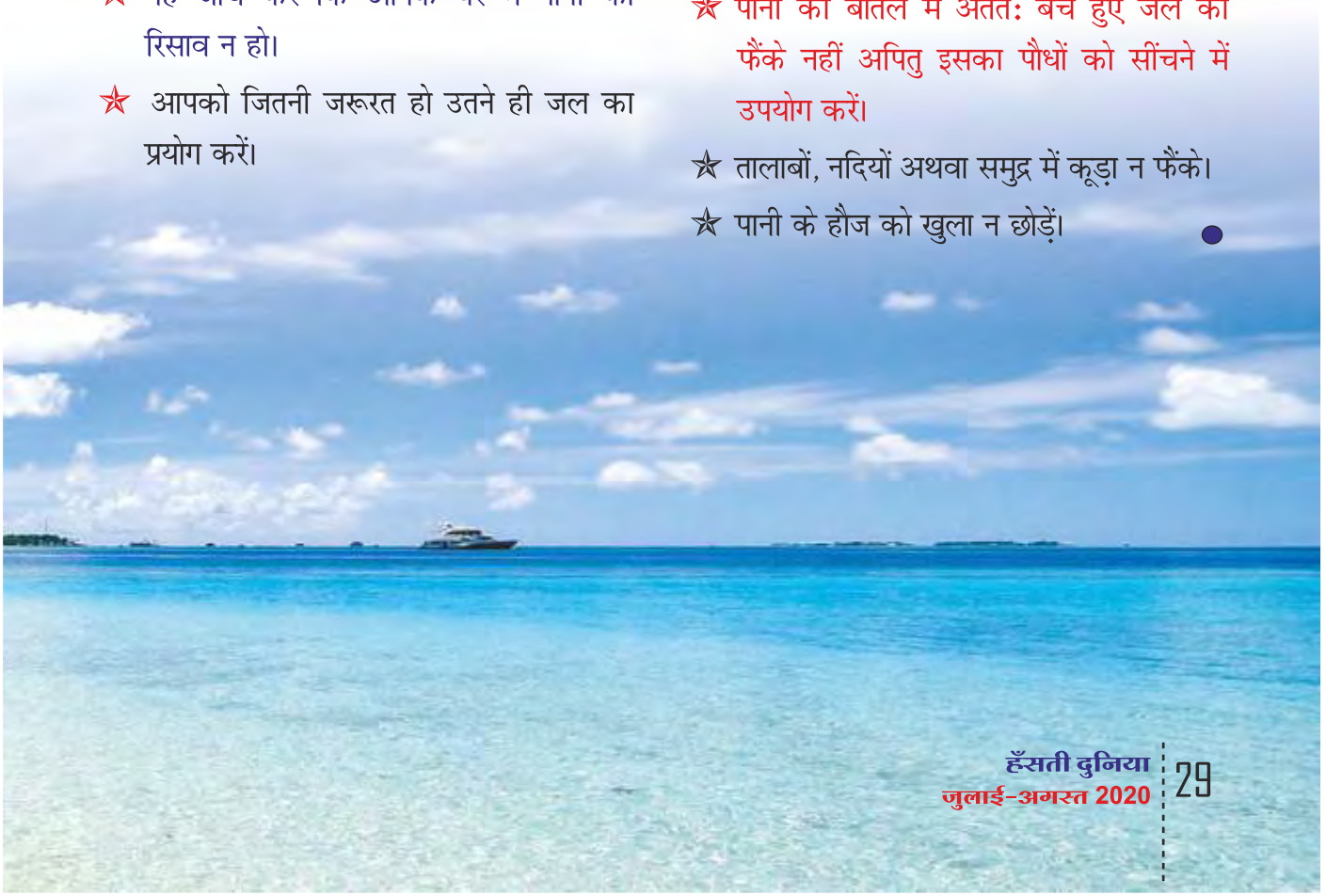

नन्ही कलम से

कविता : वंदिता अरोड़ा

बादल आये-बादल आये

बादल आये बादल आये संग अपने वर्षा लाए,
बादल आये बादल आये कहने हम बच्चों को हाय।

बादल आये बादल आये बहुत दिनों से जिसको हम रहे थे बुलाए,
बादल आये बादल आये यूँ छुप-छुपकर इतराए।

बादल आये बादल आये अपनी खुशी सब पर जताए।
बादल आये बादल आये बच्चे बाहर जाने के लिए माँ को सताए।

बादल आये बादल आये बच्चे झूम-झूम बारिश में नहाये,
बादल आये बादल आये चारों ओर हरियाली छाये।

बादल आये बादल आये खेत खलियान खूब मुस्कुराए,
बादल आये बादल आये मुरझाए फूलों को खिलाए।

बादल आये बादल आये मोर अपना नाच दिखाए,
बादल आये बादल आये संग टर्र-टर्र करते मेढक लाए।

बादल आये बादल आये सब बच्चे पकौड़े खाएं।
बादल आये बादल आये 'वंदिता' झूमे नाचे गाए।

कहानी :
आर.डी भारद्वाज

उपकार का फल

बहुत समय पहले की बात है, स्कॉटलैण्ड में एक किसान रहता था, जिसका नाम था ह्यूज़ फ्लैमिंग। एक दिन जब वह अपने खेतों में काम निपटाकर, शाम को घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो अचानक उसे किसी के चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ी। उसने आवाज़ आने की दिशा में ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की तो पता चला कि एक बच्चा मदद के लिए चीख-पुकार कर रहा है। शाम का वक्त था, सूर्य अस्त हो रहा था और थोड़ा-थोड़ा अन्धेरा भी हो रहा था। खैर, वो आवाज़ आने की दिशा में आगे बढ़ता गया। उनके खेतों के बाद थोड़ा दलदल का इलाका था और उसके बाद जंगल शुरू हो जाता था। दलदल के इलाके में पहुँचकर उसने देखा कि एक 9-10 साल का बच्चा दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है और वह मदद के लिए चीख रहा था। वह लड़का बुरी तरह से हो रहा था और डरा हुआ भी था।

फ्लैमिंग ने लड़के को देखकर उसे हिम्मत दी और कहा, ''डरो नहीं, मैं तुम्हें बचाऊँगा।'' यह कहते हुए वह लड़के की तरु दलदल में आगे बढ़ने लगा। लेकिन अभी वह थोड़ी ही दूर गया तो उसे एहसास हुआ कि दलदल तो बहुत गहरा है, अगर वह आगे बढ़ा तो शायद वह भी उस लड़के की तरह उसमें फंस जाएगा। लड़का भी उसे देखकर खुश हो गया कि आखिरकार उसे बचाने वाला कोई आ गया है और यह यथासम्भव यत्न भी कर रहा है। लेकिन फ्लैमिंग ने वहीं रूककर थोड़ी देर के लिए सोचा कि अपनी जान को खतरे में डाले बिना, लड़के को कैसे बचाया जा सकता है? फिर, जैसे कि उसे कोई युक्ति सूझ गई हो, वह उस लड़के से कहने लगा, ''देखो बेटा! तुम डरना नहीं, रोना नहीं। मैं तुझे बचाने के लिए कोई-न-कोई इंतजाम करके 5-7 मिनट में वापस आता हूँ।''

फ्लैमिंग जल्दी-जल्दी वापिस अपने खेतों की ओर भागा। खेतों में उसने अपने जानवरों के लिए एक कच्चा मकान बना रखा था। उस मकान के एक तरफ उसका खेती-बाड़ी का सामान रखा हुआ था। अपने मकान में पहुँचकर उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई, अचानक उसकी नज़र एक लम्बी रस्सी पर पड़ी। फ्लैमिंग ने तुरन्त रस्सी उठाई और वापस

दलदल में फंसे उस लड़के की तरफ दौड़कर गया और लड़के से कहने लगा– ''मैं यह रस्सी तुम्हारी तरु फैंकता हूँ, तुम उसका दूसरा सिरा पकड़ लेना, ठीक है? लड़के ने ''हाँ'' में अपना सिर हिलाया। फ्लैमिंग ने फिर पूरे जोर से रस्सी का दूसरा सिरा लड़के की ओर फैंका। लड़के ने किसान के कहे अनुसार रस्सी के सिरे को कसकर पकड़ लिया। दूसरी ओर फ्लैमिंग उसे धीरे-धीरे खींचने लगा। ऐसे करते-करते 4-5 मिनट की कोशिश के बाद फ्लैमिंग ने लड़के को दलदल से बाहर निकाल लिया। अगर वह लड़के को बाहर न निकालता तो न जाने लड़के का क्या हश्र होता क्योंकि उस दलदल में कई प्रकार के खतरनाक जानवर भी थे और दलदल के पीछे तो जंगल था ही, जो कि जंगली जानवरों से भरा पड़ा था।

दलदल से निकालने के बाद फ्लैमिंग उसे अपने खेत में ले गया और जाकर उसके और अपने कपड़े, जो कि दलदल वाले कीचड़ से बुरी तरह सने हुए थे, पानी से साफ किये। फिर फ्लैमिंग के पूछने पर उस लड़के ने बताया किया उसका नाम विन्सटन है और वह दिन में अपने 7-8 दोस्तों के साथ वहाँ घूमने आया था ताकि वह गाँव की सैर कर सके और जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक जीवन में रहते हुए देख सके। शाम होते-होते बाकी सभी उनके साथी तो निकलकर चले गये, लेकिन वह वहाँ पर दलदल वाले कीचड़ में फंस गया।

बातें करते-करते फ्लैमिंग ने लड़के को उसके घर पहुँचाया और देर रात वह अपने घर पहुँचा। इस घटना को 10-12 दिन ही हुए थे कि एक दिन शाम को उसके घर के सामने एक गाड़ी आकर रूकी। फ्लैमिंग और उसकी पत्नी थोड़ा सकते में थे क्योंकि उनके किसी भी रिश्तेदार व पारिवारिक मित्र के पास उस वक्त गाड़ी तो थी नहीं, तो उनके घर गाड़ी में कौन आ सकता है? वे दोनों ऐसे ही विचारों में उलझे हुए थे कि दूसरे ही पल शानदार सा सूट-बूट पहने एक सज्जन उनके घर में दाखिल हुआ। दोनों वहीं खड़े एक-दूसरे का नज़रों से ही निरीक्षण कर रहे थे कि अचानक फ्लैमिंग ने सज्जन से पूछा– ''आप कौन है और किससे मिलना है?''

संक्षिप्त जवाब में अतिथि ने उत्तर दिया –''फ्लैमिंग से।''

''जी फरमाइए! मैं ही फ्लैमिंग हूँ।'' इतनी देर में एक लड़का भी वहाँ आ गया, जिसे पहचान कर फ्लैमिंग उनके आने का उद्देश्य थोड़ा-थोड़ा समझ गया। फ्लैमिंग की पत्नी भी उनको देखकर थोड़ा चकित थी। अतिथि और उसके लड़के को बैठाने लायक उनके घर फर्नीचर

तो था ही नहीं, बस आंगन में एक टूटी-फूटी चारपाई पड़ी थी। फ्लैमिंग की पत्नी ने उनको चारपाई पर बैठने के लिए कहा। ऐसे वे दोनों संकोच करते-करते बैठ गये। फ्लैमिंग की पत्नी उनके लिए पानी लेकर आई, तत्पश्चात् फ्लैमिंग ने उनसे अपने गरीबखाने पर पधारने का कारण पूछा और बोले, ''दरअसल, मैंने आपको पहचाना नहीं, आप कौन हैं और आपको मुझसे क्या काम है?''

अतिथि ने जवाब दिया- ''मेरा नाम रैन्डोल्फ चर्चिल है। मैं एक बिजनेसमैन हूँ। आपको याद होगा कि थोड़े दिन पहले आपने एक बच्चे की जान बचाई थी जो कि जंगल के पास वाले दलदल में फंस गया था। यह वही लड़का है, मेरा बेटा विन्सटन। आज मैं आपको इसके लिए धन्यवाद करने आया हूँ। आपने मेरे बेटे को बचाकर मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है।''

फ्लैमिंग ने जवाब में बस इतना ही कहा, ''जी वो तो मेरा फर्ज था।'' बातें करते-करते रैन्डोल्फ चर्चिल ने फ्लैमिंग के घर का मुआयना भी किया। उसने देखा कि किसान का घर बहुत खस्ता हाल में है, लेकिन उस किसान परिवार में सबर-संतोष की कमी नहीं है। फिर रैन्डोल्फ ने अपने कोट की जेब से नोटों की गड्डी निकाली और फ्लैमिंग की तरफ बढ़ाते हुए बोला- ''मेरी तरफ से आपके लिए एक छोटा-सा शुकराना है, स्वीकार करें।'' पैसे देखकर फ्लैमिंग का मन गरीबी के बावजूद भी डोला नहीं, और उसने जवाब दिया- ''आपका यह शुकराना मैं स्वीकार नहीं कर सकता। जो कुछ मैंने किया वह तो केवल वक्त का तकाज़ा था, सो मैंने तो केवल हालात के अनुसार अपना फर्ज़ निभाया है।''

रैन्डोल्फ चर्चिल ने बड़ी कोशिश की कि फ्लैमिंग उसका तोहफा कबूल कर ले, लेकिन वो नहीं माना। उसे मन-ही-मन बहुत बुरा लग रहा था कि उस गरीब किसान को पैसे की कितनी सख्त जरूरत है, लेकिन फिर भी वह पैसे लेने के लिए तैयार नहीं हुआ। इतने में उस घर में एक 8-9 वर्ष का लड़का दाखिल हुआ, जो कि फ्लैमिंग की ही तरह फटे-पुराने कपड़ों में था और उसके पैरों में कोई जूता भी नहीं था। लड़के को देखकर सज्जन ने पूछा, ''यह आपका बेटा है क्या?'' किसान ने उत्तर दिया- ''जी हाँ, यह मेरा बेटा अलेक्जेंडर है।'' फिर रैन्डोल्फ ने दुबारा पूछा, किस कक्षा में पढ़ता है? लड़का खामोश खड़ा रहा- लेकिन फ्लैमिंग ने जवाब दिया - ''जी मैं तो एक गरीब किसान हूँ, बेटे को स्कूल भेजने की हममें हिम्मत कहाँ है?''

सज्जन ने दूसरा सवाल किया, ''तो यह लड़का सारा दिन क्या करता है?

फ्लैमिंग ने जवाब दिया– ''अभी तो यह छोटा बच्चा है, इधर–उधर खेलता रहता है, जब 15–16 वर्ष का हो जाएगा, तो मेरे साथ खेतों के काम में हाथ बंटाएगा।''

सुनकर वह अतिथि सज्जन खड़ा हो गया फिर मन–ही–मन थोड़ा गंम्भीर मुद्रा में सोचते हुए वह लड़के के पास गया और उसने लड़के के सिर पर हाथ फेरा और बोला– ''इसके लिए मेरे पास एक सुझाव है। अगर आपको विश्वास हो, तो मैं इसे अपने पास ले चलता हूँ। मेरा लड़का, जिसकी आपने जान बचाई थी– विन्सटन, मैं इसे उसी के साथ स्कूल में दाखिल करवा दूँगा, उसे उच्च शिक्षा दिलवाऊँगा, ताकि इसकी जिन्दगी संवर सके। आपसे यही निवेदन है कि आप ना मत कहना।''

चर्चिल की बातें सुनकर फ्लैमिंग व उसकी पत्नी एक–दूसरे की ओर देखने लग गए। फिर उन्होंने उस सज्जन के ज्यादा आग्रह करने पर अपने लड़के को उसके साथ भेजने हेतु तैयार हो गए। इस तरह रैन्डोल्फ चर्चिल, अलेक्ज़ेण्डर को अपने साथ ले गया, उसे मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। ऐसे करते–करते उस लड़के ने सेंट मेरीज़ हॉस्पिटल मेडिकल स्कूल से उच्च शिक्षा प्राप्त की और एक उच्च कोटि का वैज्ञानिक बन गया, जिसे आज हम सर अलेक्ज़ेण्डर फ्लैमिंग (1881–1955) के नाम से जानते हैं। यह वही वैज्ञानिक अलेक्जेण्डर फ्लैमिंग है जिसने कि 1928 में पेनिसिलन मेडिसिन की खोज की थी और इसके लिए 1945 में उसे नोबेल पुरस्कार मिला था। बहुत वर्ष बाद वह लड़का, जिसे फ्लैमिंग ने बचाया था, बड़ा होने पर वह एक बार 1943 में बहुत बुरी तरह बीमार पड़ गया, दरअसल उसे निमोनिया हो गया था और जिस दवाई के कारण उसकी जान बच पाई थी, वह पेनिसिलिन ही थी, जिसकी खोज 1928 में अलेक्जेण्डर फ्लैमिंग ने की थी और विन्सटन चर्चिल (1874–1965) वही आदमी है, जो कि बड़ा होकर इंग्लैण्ड की कन्ज़र्वेटिव पाटी का लीडर बना था। वह एक अच्छा लेखक भी रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के समय (1939–1945) के दौरान वह इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री था। एक बार वह (1951–55) की अवधि के लिए भी वहाँ का प्रधानमंत्री रहा। यही नहीं, उसे 1953 में साहित्य में बेहतरीन योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार से भी नवाज़ा गया।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

स्वच्छ भारत अ
स्वच्छ
भारत
तुमने बिल्कुल ठीक कहा किट्टी बेटा! बच्चों, स्वच्छता से हमारा तन और मन दोनों निर्मल व स्वच्छ रहते हैं तथा वातावरण भी शुद्ध रहता है।
टीचर जी, मैं तो अपने घर के अन्दर, बाहर तथा आस-पड़ोस में सफाई का विशेष ध्यान रखती हूँ।
शाबाश, किट्टी! बच्चों, आप सभी ने तो देखा ही होगा कि कितने बड़े-बड़े नेता, अभिनेता हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए इस अभियान में लगे हुए हैं।

हाँ! टीचर जी, मैंने टी.वी. पर प्रचार भी देखा था जिसमें लोग सड़क पर झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का प्रचार कर रहे थे।
ठीक कहा किट्टी तुमने! बच्चों उनकी इस पहल को हम सभी को अपनाना होगा क्योंकि भारत हमारा देश है और हम इसमें रहते हैं। इसकी हर सड़क-गली को साफ रखना हमारा कर्तव्य है।
आप बिल्कुल सही कह रहे हो टीचर जी।
जी टीचर जी, हम भी इस अभियान में शामिल हो गए हैं और स्वच्छता को अपनाएंगे।
बहुत अच्छा बच्चों! अब से आपका भी कर्तव्य है कि अपने आस-पास कूड़ा इकट्ठा न होने दें, कूड़ेदान का हमेशा प्रयोग करना चाहिए और सुनो अगर कोई इधर-उधर कूड़ा या गंदगी फैलाता हुआ नजर आए तो उसे मना करो।

टीचर जी! इसके साथ ही हम रविवार को अपने मुहल्ले का भी दौरा करेंगे और लोगों को स्वच्छता के फायदों के बारे में भी बताएंगे।
बहुत खूब बच्चों। वैसे भी बच्चों साफ -सफाई के काम में हमें शर्म नहीं करनी चाहिए। शर्म तो गदंगी से करनी चाहिए।
ठीक कहा आपने टीचर जी! स्वच्छता तो हमारी शान होनी चाहिए।

बाल कहानी : मीरा सिंह 'मीरा'

चुहिया की ज़िद

रामपुर गाँव में बगीचे के पास एक प्राइमरी विद्यालय था। जहाँ गाँव के बच्चे रोज पढ़ने जाया करते थे। उसी विद्यालय के पिछवाड़े में रानी चुहिया का परिवार एक बिल के अन्दर सुख-शांति से जिन्दगी बसर कर रहा था। रानी अपने परिवार की सबसे छोटी सदस्य थी। हँसमुख, नटखट, मिलनसार व साहसी थी इसलिए सबकी प्यारी व लाडली थी।

बिल से बाहर निकलकर रानी अक्सर स्कूल के बच्चों को हँसते, खेलते, पढ़ते-लिखते देखा करती। बच्चों को पढ़ते देखकर उसका जी पढ़ने के लिए ललचाता। एक दिन कक्षा में शिक्षक

महोदय जब शिक्षा के महत्व को समझा रहे थे तो वह भी कान लगाकर सुन रही थी। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया कि वह भी पढ़ेगी-लिखेगी। पढ़-लिखकर चूहा जाति का उत्थान करेगी। फिर क्या था? अपने मन की बात अपने परिजनों के समक्ष रखी। उसकी ख्वाहिश सुनकर परिजन चिंता में डूब गए। सभी अपने-अपने तरीके से उसे समझाने-बुझाने का प्रयास करने लगें सबने एक स्वर से यही समझाने का प्रयास किया कि व्यर्थ के लफड़े में नहीं पड़े।

दरअसल परिवार वालों को डर था कि पढ़ने के लिए अपने बिल से बाहर निकलकर पास के विद्यालय में जाना होगा। उसी रास्ते में कालू बिल्ला का आतंक था। उसके डर से कोई भी चूहा उस रास्ते से नहीं गुजरता था। अपनी प्यारी रानी की जिन्दगी को खतरे में डालने की अनुमति कोई कैसे देता?

रानी चुहिया समझ चुकी थी कि उसे क्यों नहीं पढ़ने दिया जा रहा। वह उदास होने के बजाय उन्हें समझाने लगी– 'आप लोग व्यर्थ चिंता कर रहे हैं। पता है विद्यालय में गुरु जी क्या बता रहे थे?'

इस पर सभी ने एक स्वर से पूछा– 'क्या?'

गुरुजी बता रहे थे– 'एक समाज तभी विकास कर सकता है जब उसके नागरिक शिक्षित हों। शिक्षा से बुद्धि का विकास होता है, सोच-समझ बढ़ती है। हमें डर कर नहीं निडर होकर जीना चाहिए। वो यह भी कह रहे थे कि जो चुप रहकर अन्याय सहता है, वह भी अपराधी होता है। आप लोग क्यों अपराधी बनना चाहते हैं।?'

'क्या बात कर रही हो रानी? हम कालू बिल्ला से डरते हैं तो क्या हम भी अपराधी हैं?' बूढ़ी चुहिया दादी ने आश्चर्य से पूछा।

'और नहीं तो क्या? दादी, कोई किसी को बिना किसी कारण के तंग नहीं कर सकता। कालू बिल्ला भी नहीं। अगर वह बिना किसी कारण से हमें तंग करेगा तो उसे जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है। उसे देखकर हम डरते हैं इसलिए वह डराता है।' रानी की बात सुनकर सभी परिजन आपस में सलाह करने लगे। आम सहमति से सबने उसे पढ़ने की इजाजत दे दी। फिर क्या था? वह खुशी-खुशी विद्यालय जाने लगी।

एक बार कालू बिल्ला ने रानी चुहिया को परेशान किया तो दरोगा लोमड़मल ने कालू बिल्ला को सलाखों के पीछे डाल दिया। रानी की देखा-देखी अन्य वनप्राणी भी विद्यालय में जाने लगे और भयमुक्त वातावरण खुशहाल हो गया। ■

हँसती दुनिया पढ़ते जायें
जीवन में आगे बढ़ते जायें।

❑ घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : खाना पकाने के बर्तन नीचे से काले और ऊपर से चमकदार क्यों होते हैं?

उत्तर : काली वस्तु ऊष्मा को शीघ्रता से अवशोषित कर लेती है। अत: खाना पकाने के बर्तनों के पेंदे काले रखे जाते हैं ताकि बर्तन अधिक ऊष्मा को ग्रहण करके जल्दी से खाना पका दें। दूसरी बात, बर्तनों की ऊपरी सतह चमकदार इसलिए रखी जाती है ताकि बर्तनों में से ऊष्मा का स्थानान्तरण (बाहर न निकल सके) न हो सके।

प्रश्न : बर्फ को बोरी या बुरादे में क्यों रखते हैं?

उत्तर : बोरी और बुरादे में तमाम छिद्र होते हैं और उन छिद्रों में वायु भरी होती है। यह तो तुम जानते हो कि वायु ऊष्मा की कुचालक रहती है जो बाहर की ऊष्मा को अन्दर बर्फ तक आने से रोकती है। फलस्वरूप, बर्फ पिघल नहीं पाती है। बस, यही वजह है कि बर्फ को बोरी या बुरादे में ही रखा जाता है।

प्रश्न : रेगिस्तान में दिन के समय गर्मी और रात्रि को ठंड क्यों होती है?

उत्तर : रेगिस्तान में रेत की अधिकता रहती है। रेत ऊष्मा का अच्छा अवशोषक है। अत: दिन के समय सूर्य की ऊष्मा को अवशोषित करके रेगिस्तान गर्म हो जाते हैं और वहाँ गर्मी रहती है। रेगिस्तान विकिरण द्वारा अपनी ऊष्मा को निकालकर रात्रि में ठंडे हो जाते हैं जिससे रात्रि को वहाँ ठंड रहती है।

प्रश्न : चिड़ियां सर्दियों में अपने पंख क्यों फैलाए रखती हैं?

उत्तर : जब सर्दियां शुरू होती हैं तो चिड़ियां अक्सर अपने पंख फैलाए हुए देखी जाती हैं। जानते हो वे ऐसा क्यों करती हैं? जब चिड़ियां पंख फैलाकर बैठती हैं तो उनके शरीर और पंखों के बीच में हवा की परत आ जाती है। चूंकि हवा ऊष्मा की कुचालक है जो चिड़ियों के शरीर की ऊष्मा को बाहर जाने से रोकती है। इस प्रकार चिड़ियां सर्दी के कुप्रभाव से स्वयं को बचाने में सक्षम हो जाती हैं।

कहानी : साबिर हुसैन

मीकू और लकड़बग्घा

बस्ती के सात-आठ खरगोश बैठे दूब-घास खाते हुए बातें कर रहे थे। तभी पास के पेड़ पर बैठे किटकिट बंदर ने पेड़ से छलांग लगायी और खरगोशों के पास जा पहुँचा और चिल्ला कर बोला- ''भागो! लकड्बग्घा आया।''

किटकिट बंदर कूदकर पेड़ पर चढ़ गया। सभी खरगोश भागे, तभी लकड़बग्घा वहाँ आ गया लेकिन तब तक सभी खरगोश सुरक्षित अपनी बिलों में पहुँच चुके थे। अगर किटकिट बंदर ने उन्हें लकड़बग्घे के आने की सूचना न दी होती तो एक-दो खरगोश लकड़बग्घे का शिकार बन जाते। जंगल के जानवर एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। कल ही मीकू खरगोश ने आकर किटकिट बंदर को बताया था कि बड़े बरगद के पेड़ के पास शिकारी पिंजड़ा रख गये हैं। उसमें केले आदि फल रखे हैं, जो भी बंदर केला उठाने पिजड़े में जाएगा वह फंस जाएगा। किटकिट बंदर ने मीकू खरगोश को धन्यवाद दिया, उसने सभी बंदरों को समझा दिया कि कोई पिजड़े में केले लेने न घुसे वरना उसी में बंद हो जाएगा और शिकारी उसे पकड़ ले जायेंगे।

उस दिन बस्ती के खरगोश मैदान में खेल रहे थे तभी लकड़बग्घा आ गया था। जब तक खरगोश भागते, लकड़बग्घे ने एक खरगोश को पकड़ कर मार दिया था। लकड़बग्घा जान गया था कि यह खरगोशों की बस्ती है। इसलिए वह रोज ही आने लगा।

लकड़बग्घे ने एक बिल में खरगोश को घुसते देखा था। वह अपने पंजों से उस बिल को खोदने लगा।

"यह लकड़बग्घा तो हमारी जान के पीछे ही पड़ गया है।" मीकू खरगोश बोला।

"अब तो कुछ करना ही पड़ेगा, मीकू खरगोश कहते हुए बिल के बाहर आ गया। उसके दिमाग में लकड़बग्घे से छुटकारा पाने की युक्ति आ गई थी।

"अरे कहाँ जा रहे हो, यह लकड़बग्घा तुम्हें मार डालेगा।" किट्टू खरगोश बोला।

लकड़बग्घे ने मीकू खरगोश को मैदान में देखा तो उस पर छलांग लगा दी लेकिन उससे पहले मीकू ने छलांग लगा दी और एक ओर भागने लगा, लकड़बग्घा उसके पीछे दौड़ पड़ा। मीकू तेजी से भागता और आगे जाकर रूक जाता। लकड़बग्घा उसे रूका देखकर उसे पकड़ने के लिए और तेज दौड़ने लगता। लकड़बग्घे के पास आते ही मीकू फिर भागने लगता, कई बार ऐसा लगा कि लकड़बग्घा मीकू को पकड़ लेगा लेकिन वह बच कर निकल जाता।

भागते-भागते मीकू खरगोश वहाँ पहुँच गया जहाँ शिकारियों ने बड़ा-सा पिजड़ा लगा रखा, वह खुला हुआ था और अंदर फल रखे थे। मीकू भाग कर पिजड़े के पीछे इस प्रकार बैठ गया कि दूर से देखने पर ऐसा लगा रहा था जैसे मीकू पिंजड़े में बैठा हो। लकड़बग्घे ने मीकू को बैठे देखा तो पिंजड़े के पास आकर मीकू को पकड़ने के लिए पिंजड़े के अंदर छलांग लगा दी। लकड़बग्घे के पिंजड़े में पहुँचते ही दरवाजा बंद हो गया और लकड़बग्घा पिंजड़े में फंस गया। मीकू ने लकड़बग्घे को पिंजड़े में कैद देखा तो खुश होकर बस्ती की ओर चल दिया।

जब मीकू ने बताया कि उसने लकड़बग्घे को पिंजड़े में कैद कर दिया है तो सभी खरगोशों ने उसके साहस और बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

पढ़ो और हँसो

एक आदमी रात को गली के सामने खड़ा था।

–कौन हो?– वहाँ से गुजरते हुए चौकीदार ने पूछा।

–शेर सिंह।– जवाब मिला।

पिता का नाम– शमशेर सिंह।

कहाँ रहते हो?– शेरोंवाली गली में।

यहाँ क्यों खड़े हो?– कैसे जाऊँ आगे कुत्ता खड़ा है।

❖ – ❖ – ❖

एक लड़का पॉर्क में साइकिल चला रहा था। उसकी माँ गर्व से उसे देख रही थी।

पहले चक्कर में माँ के पास आने पर लड़के ने कहा–

देखिये मम्मी, हाथों के बिना।

दूसरे चक्कर में बोला–

देखिए मम्मी, पैरों के बिना।

तीसरे चक्कर में वह चिल्लाया–

देखिए मम्मी दांतों के बिना।

❖ – ❖ – ❖

एक हाथी पुल पार कर रहा था। उसकी पीठ पर मक्खी बैठ गई। बीच नदी में पुल जोर से चरमराने लगा तो मक्खी बोली– पार पहुँच जाओगे या मैं उतरूँ?

– मीनाक्षी आनन्द (कानपुर)

एक फौजी अफसर ने मेज पर रखे बिस्कुट के डिब्बों की तरफ इशारा करते हुए अपने सिपाहियों से कहा –

जवानों इन बिस्कुटों पर इस तरह टूट पड़ो जैसे लड़ाई में दुश्मन पर टूटते हैं।

यह सुनते ही सिपाही बिस्कुटों पर टूट पड़े और उन्हें खाने में जुट गए। एक सिपाही कुछ बिस्कुट खाता और कुछ अपनी जेब में रखता जा रहा था।

अफसर : तुम ये क्या कर रहे हो?

सिपाही : सर! कुछ दुश्मनों को कैदी बना रहा हूँ।

❖ – ❖ – ❖

एक सीधा-सादा देहाती रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर जाकर टिकट बाबू से बोला–

एक टिकट दीनदयाल का देना।

टिकट बाबू बड़ी देर तक स्टेशनों के नामों की पुस्तक खोलकर देखते हुए परेशान होकर बोला–

अरे, यह है कहाँ?

देहाती : बाबू जी, वह बाहर बेंच पर बैठा है।

❖ – ❖ – ❖

एक आदमी : (अपने मित्र से) तुमने अपनी छुट्टियां कैसे बिताई?

मित्र : एक दिन घुड़सवारी में और बाकी दिन अस्पताल में।

– पूजा संगतानी (बालोतरा)

डॉक्टर : (मरीज से) मैंने तुम्हें याददाश्त ठीक करने की दवाई दी थी। कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : जी, अभी तक तो कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं रोज दवाई लेना भूल जाता हूँ।

❖ – ❖ – ❖

एक पड़ोसी : (दूसरे पड़ोसी से) 'तीन बुलाओ और तेरह आ जाएं' तो क्या किया जाए?

दूसरा पड़ोसी :फौरन 'नौ दो ग्यारह' हो जाने में ही भलाई है।

❖ – ❖ – ❖

अनुज : भैया! 'आई डोन्ट नो' का क्या अर्थ है?

मनुज : 'मैं नहीं जानता हूँ।'

अनुज : आप नहीं जानते तो आपने अंग्रेजी में एम.ए. कैसे कर लिया?

❖ – ❖ – ❖

माँ : बेटे, जरा देखना तो दूध उबलकर बाहर तो नहीं आ रहा?

बेटा : माँ आप चिन्ता न करो मैंने रसोईघर का दरवाजा बन्द करके कुंडी लगा दी है।

❖ – ❖ – ❖

पिता : बेटे, तुम इतिहास में फेल क्यों हुए?

बेटा : क्या करता पिताजी! सभी प्रश्न उस समय के थे जब मैं पैदा ही नहीं हुआ था।

❖ – ❖ – ❖

एक कंजूस व्यक्ति को करंट लगा।

उसकी पत्नी ने पूछा– आप ठीक तो हो ना।

व्यक्ति बोला– मैं ठीक हूँ। तू मीटर देख, यूनिट कितना बढ़ा है।

❖ – ❖ – ❖

ग्राहक : यह मच्छरदानी कितने की है?

दुकानदार : पाँच सौ रुपये की। इसमें कोई मच्छर नहीं घुस सकता।

ग्राहक : मुझे नहीं लेनी। जब इसमें मच्छर नहीं घुस सकता तो मैं कैसे घुस सकता हूँ?

❖ – ❖ – ❖

अध्यापक : (वीरू से) तुमने कितने दिनों तक लगातार बारिश होते देखी है।

वीरू : एक दिन तक।

अध्यापक : क्या दो दिन तक बारिश नहीं हो सकती?

वीरू : नहीं सर! क्योंकि बीच में रात भी तो होती है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

सैकरीन का आविष्कार

गरमी का महीना था। संध्या की वेला थी। आकाश साफ था। अध्यापक विजय सेन ने सेठ जी के पुत्रों से कहा– ''आज पार्क में हम लोग घूमने चलेंगे।''

''हाँ चलिए,'' तीनों ने हामी भरी।

अगले ही क्षण वे पार्क में थे। वहाँ पहुँचकर वे खुश हुए। तीनों लड़के पॉर्क में इधर-उधर उछल-कूद करने लगे।

थोड़ी देर बाद वे पॉर्क की एक बेंच पर जा बैठे। वहाँ से कुछ ही दूर पर पॉर्क के बाहर एक ठेला वाला शर्बत बेच रहा था। सुमन ने शर्बत पीने की इच्छा जाहिर की। शशि और सन्तोष भी पीछे नहीं रहे।

अध्यापक महोदय ने तीनों को शर्बत पीने की इजाजत दे दी। जब वे शर्बत पीकर लौटे तो अध्यापक महोदय ने पूछा– ''शर्बत कैसा लगा?''

''मीठा।'' सभी एक साथ बोले।

''मीठा क्यों था?'' अध्यापक महोदय ने सन्तोष से सवाल किया।

''चीनी घुली-मिली थी।''– उसने जवाब दिया।

''ऐसी बात नहीं है।''– अध्यापक बोले।

''तो फिर?''

''जल में चीनी की जगह सैकरीन दिया गया है।

''थोड़ा-सा सैकरीन बहुत अधिक जल को मीठा बना देता है।'' अध्यापक महोदय ने बताया।

''अजीब बात है।' तीनों हैरान थे।

''जानते हो, सैकरीन का आविष्कार कैसे हुआ?'' अध्यापक विजय सेन ने तीनों से पूछा।

''हम नहीं जानते हैं? आप ही इसके बारे में बताइए न।''

तीनों उत्सुक हो उठे।

''फिर सुनो।''– वह बोले।

''कहिए।'' सबकी नजर अध्यापक महोदय के चेहरे पर जा टिकी।

''एक वैज्ञानिक था। अपनी प्रयोगशाला में वह एक बार कोलतार से प्राप्त 'टालुइन' नामक कार्बनिक यौगिक पर कुछ कार्य कर रहा था। इस सिलसिले में उसने उस यौगिक पर कई रसायनों से भी प्रयोग किये।'' कहते-कहते अध्यापक महोदय अपनी जगह से उठ खड़े हुए। फिर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई। ''घंटो प्रयोग वह करता रहा। भोजन का समय हो गया। इसके लिए उसे बुलावा आया। मगर वह अपने प्रयोग में ऐसा खोया रहा कि खाने की तनिक भी सुधि नहीं रही। दूसरी बार बुलाहट हुई। उसने उसे भी टाल दिया। जब कई बार बुलाहट हुई

तो लाचार हो उसे अपनी जगह से उठना पड़ा।''

''फिर क्या हुआ?'' सुमन ने जानना चाहा।

अध्यापक महोदय ने उसकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए आगे कहा– ''वह वैज्ञानिक झटपट भोजन कर पुनः अपने प्रयोग में भिड़ जाना चाहता था। इस जल्दबाजी में वह भोजन करने से पहले अपने हाथ को अच्छी तरह धो भी नहीं सका। जैसे-तैसे भोजन करना उसने शुरू कर दिया।...''

''अच्छा तो'' शशि बीच में बोल उठा।

''जानते हो, जब उस वैज्ञानिक ने भोजन का पहला कौर मुँह में डाला तो वह उसे काफी मीठा जान पड़ा। फिर उसने गौर से भोजन-सामग्री की ओर निहारा। उसके अचरज का ठिकाना न रहा क्योंकि उसमें कोई भी ऐसी चीज नहीं थी, जो मीठी हो, मीठी लगे।'' इतना कहकर अध्यापक महोदय चुप हो गए।

''ऐसा कैसे हुआ?'' सन्तोष हैरान था। दूसरे भाई भी।

''बताता हूँ।'' अध्यापक महोदय ने रहस्य खोला'', उस वैज्ञानिक ने तब केवल अपनी ऊँगलियों को जीभ से चाटना शुरू किया। उसे अपनी ऊँगलियाँ भी मीठी जान पड़ी। नतीजा हुआ कि उसका वैज्ञानिक दिमाग तेजी से क्रियाशील हो उठा। झट उसके दिमाग में एक बात आयी, यह किसी रसायन का असर है।''

''तो फिर?'' शशि ने बेसब्री जाहिर की।

''अब उस वैज्ञानिक का ध्यान भोजन से उचट गया। उसने बीच में ही अपना भोजन छोड़ दिया और प्रयोगशाला की ओर जा बढ़ा। वहाँ आकर उसने एक-एक कर प्रत्येक रसायन को चखना शुरू किया, जिसे वह इसके पहले परीक्षण के कार्य में उपयोग में ले रहा था। थोड़ी देर बाद मीठा लगने वाला रसायन उसकी पकड़ में आ गया। पकड़ में आते ही उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।''

अध्यापक विजय सेन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा– ''यह संयोग ही था कि इस तरह की एक साधारण-सी घटना से 'सैकरीन' का आविष्कार हुआ। कई चीजों में अब इसका उपयोग किया जा रहा है। मधुमेह के मरीजों के लिए यह काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।''

''उस वैज्ञानिक का क्या नाम है जिसने 'सैकरीन' का आविष्कार किया?'' तीनों ने एक स्वर से अध्यापक जी से पूछ डाला।

''उसका नाम है– फालबर्ग।'' अध्यापक ने बताया और फिर पूछा– ''अब तो सैकरीन के आविष्कार के बारे में तुम सब अच्छी तरह जान गए?''

''बिल्कुल'', तीनों ने कहा। फिर वे सभी घर की तरफ लौट चले।

प्रेरक–विभूति – राजेन्द्र यादव 'आजाद'

देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का बाकी यही निशां होगा।

आज वास्तव में शहीदों का निशां ही बाकी रह गया है। देश की आजादी में शहीद हुए अनगिनत देश–भक्तों में से एक थे पंजाब केसरी लाल लाजपत राय।

लाल जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था। वे एक सच्चे देशभक्त थे और पारिवारिक गरीबी के कारण कड़ी मेहनत कर वकालत की शिक्षा प्राप्त की और लाहौर में वकालत करने लगे।

लाहौर में रहते हुए इनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ और ये स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित हो देश एवं समाज सेवा में लग गये। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने गरीबों एवं दलितों के उत्थान के लिए लोक सेवक मण्डल की स्थापना की और नि:स्वार्थ भाव से इस दबे हुए शोषित एवं दलित समाज की सेवा की। वहीं दूसरी तरफ बाल गंगाधर तिलक एवं विपिन चन्द्र पाल के साथ अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण आपका दल गर्म दल बन गया और लाल–बाल–पाल के नाम से ब्रिटिश हुकुमत भी कांपने लगी।

आपके विचारों से क्रांतिकारियों को सबल मिला तो अंग्रेज आपके नाम मात्र से ही कांपने लगे। जिसके परिणामस्वरूप फिरंगियों ने आपके विरुद्ध देशद्रोह का आरोप लगाते हुए देश निष्कासन का फरमान जारी कर दिया। इन्हीं दिनों 30 अक्तूबर 1926 को साइमन कमिशन के लाहौर पहुँचने का समाचार मिला तो देश भर में 'साइमन कमिशन वापस जाओ' के नारे लगाये गये और देश में विद्रोह की आग भड़क उठी। जिसके परिणामस्वरूप कमिशन का विरोध कर रही जनता पर फिरंगी सिपाहियों ने लाठियां बरसानी शुरू कर दी और अंग्रेज अधिकारी जनरल साण्डर्स ने जुलूस का नेतृत्व कर रहे लाला लाजपत राय पर भी लाठियों का वार कर दिया, जिससे उनकी छाती एवं शरीर के अन्य अंग टूट गये। मगर देशभक्त जनता ने अपने प्रिय नेता के शरीर पर गिरने वाली लाठियों को अपने शरीर पर झेला और उन्हें तत्काल अस्पताल पहुँचाया गया। मगर स्वाभिमानी लाला जी कुछ समय पश्चात ही घायल अवस्था में सभास्थल पर पहुँचे और अपनी बुलन्द आवाज में अंग्रेजों को ललकारा और लाखों की संख्या में इकट्ठे हुए देशभक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि– 'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील होगी।'

इस घटना के कुछ दिनों के पश्चात् ही शरीर पर पड़ी लाठियों की चोट के कारण स्वाभिमानी देशभक्त पंजाब केसरी लाला लाजपत राय देश की आजादी के पावन यज्ञ में शहीद हो गये। ■

बाल कविताएं : अंशु शुक्ला

आओ मिलकर देश बनायें

भारत माँ की बगिया में,
नये-नये फिर फूल खिलायें।
मधुर सुगन्ध बहाकर इनकी,
सारा जग फिर से महकायें।।

सत्य न्याय के पथ पर चलना,
निज जीवन आदर्श बनायें।
जीवन संघर्षों से लड़ना,
जन-जन को फिर से सिखलायें।।

ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर,
एक नया विश्वास जगायें।
मानव में फिर मानवता भर,
मानव को आदर्श बनायें।।

हिन्दू-मुस्लिम सिख-ईसाई,
सब भाई-भाई बन जायें।
अपने-अपने भेद भुलाकर,
आओ मिलकर देश बनायें।।

भारत माता

हिमगिरी शीर्ष मुकुट है मेरा,
सिन्धु चरण रज धोता है।
जब मुस्काती मैं खुश होकर,
तभी सवेरा होता है।।

देवलोक की सुरसरि गंगा,
मेरा मान बढ़ाती है।
विन्ध्याचल की रक्तिम धरती,
मेरे मान को भाती है।।

ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी सब,
नित्य तपस्या करते हैं।
दिव्य अलौकिक ज्ञान बांटकर,
जग अलौकिक करते हैं।।

मैं भारत माता बच्चों को,
एक बात बतलाती हूँ।
जब भारत आगे बढ़ता है,
तब ही मैं सुख पाती हूँ।।

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल

कभी न भूलो

★ इन्सान अपने दु:खों से उतना दु:खी नहीं है जितना दूसरों के सुख से।

★ ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाइयों पर पड़ती है जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण टटोलते हैं।

– आचार्य विनोबा भावे

★ विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं।

– बनार्ड शॉ

★ जो चीज विकार को मिटा दे; राग द्वेष को कम कर सके; जिस चीज के उपयोग से मन सूली पर चढ़ते समय भी सत्य पर डटा रहे, वही धर्म की शिक्षा है। – महात्मा गाँधी

★ सन्तोष ही सबसे बड़ा सुख है उससे बढ़कर संसार में कुछ नहीं है।

– वेदव्यास

★ अहिंसा सबसे बड़ा पुण्य है और दूसरों की बुराई करना सबसे बड़ा पाप।

– तुलसीदास

★ अहिंसा धर्म का लक्षण है।

– चाणक्य

★ मानवता प्रेम का दूसरा नाम है।

★ जो कार्य जितनी नेकनीयत से किया जायेगा, उतना ही श्रेष्ठ होगा।

– भगवान बुद्ध

★ मन, वचन व कर्म से किसी प्राणी का बुरा मत करो।

– भगवान महावीर

★ उस दिन को बेकार ही समझो, जिस दिन तुम हँसे नहीं। – चेम्सफोर्ड

★ जुबान की अपेक्षा जीवन से उपदेश देना कहीं अधिक प्रभावकारी है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

★ मानव में ठीक उतना ही दिखावटीपन होता है, जितनी उसमें बुद्धि की कमी होती है। – पोप

★ एक मिनट देर से पहुँचने की अपेक्षा एक घंटे पहले पहुँचना अच्छा है।

– शेक्सपीयर

★ जो कुछ तुम आज कर सकते हो, उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोड़ो। – फ्रैंकलिन

★ बुरी सोहबत से उसका न होना ही अच्छा है, क्योंकि हम दूसरों के गुणों की अपेक्षा दोषों को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं।

– स्वामी विवेकानन्द

★ जिसके मन में सन्तोष है, उसके लिए हर जगह संपन्नता है।

– संस्कृत लोकोक्ति

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2018-20
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)